

100 Nadi Sutras

Vol 2

Astrological Researches Group

With

Jitender Kumar

ॐ

गुरुब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।

गुरुसाक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

आदरणीय ज्योतिष मित्रों को सम्मान!

मैं जितेंद्र कुमार पुनः आप सभी का "नाड़ी-ज्योतिष" में हार्दिक स्वागत करता हूँ। "नाड़ी ज्योतिष, भाग-1 (ई-बुक संस्करण ~ इंग्लिश और हिंदी संस्करण, अगस्त 2017)" के माध्यम से नाड़ी-ज्योतिष के विषय में अपने शोधात्मक विचार आप सभी के समक्ष प्रस्तुत किये थे।

उसी क्रम में आगे बढ़ते हुए "100 नाड़ी सूत्र, भाग-2 (ई-बुक संस्करण ~ हिंदी-इंग्लिश, दिसंबर 2017) आप सभी के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ।

मेरे ज्योतिषीय-शोध कार्यों में आदरणीय श्री प्रबोध पुरोहित जी (बिल्लीमोरा, गुजरात) के द्वारा समय-समय पर मिलने वाले निःस्वार्थ मार्गदर्शन और आशीर्वाद के लिए मैं सदैव उनका आभारी हूँ।

यदि इस पुस्तक में कोई त्रुटि हो या आप कोई सुझाव देना चाहते हैं तो, आपके विचारों का सहर्ष स्वागत है।

सर्वाधिकार: लेखक "जितेन्द्र कुमार" © सर्वाधिकार सुरक्षित।

इस पांडुलिपि या ईबुक का कोई भी हिस्सा लेखक की लिखित अनुमति के बिना पुनः प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है।

Astrological Researches Group

नाड़ी ज्योतिषः

नाड़ी ज्योतिष का एक मौलिक सिद्धांत है ~ ग्रहों का कारकत्व। प्रत्येक ग्रह-विशेष के अपने कुछ स्वतंत्र कारकत्व है, जैसे सूर्य - पिता, पुत्र आदि।

लेकिन जब ग्रह-विशेष अन्य ग्रह/ग्रहों से युति/दृष्टि, राशि परिवर्तन आदि किसी प्रकार के संबंध में हो, तो उस ग्रह-विशेष से संबंधित कारकत्व/कारकत्वों के गुण-धर्म में परिवर्तन सम्भव हो सकता है। इस पुस्तक में, मैं भृगु-नंदी नाड़ी, सप्तर्षि-नाड़ी, चंद्र-कला नाड़ी, मीन-नाड़ी आदि के आधार पर ग्रह-विशेष की अन्य ग्रह/ ग्रहों से युति के संदर्भ में अपने अध्ययन, विचारों और अनुभवों को साँझा करने का प्रयास कर रहा हूँ। मुझे उम्मीद है, कि यह प्रयास ज्योतिष-शोधार्थीयों, छात्रों और ज्योतिषियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

यदि आपके पास वास्तविक तकनीकी प्रश्न हैं, तो मैं जवाब देने के लिए अपनी पूरी कोशिश करूँगा, लेकिन मैं इस संबंध में कोई प्रतिज्ञा नहीं कर सकता। इसके अलावा, व्यक्तिगत प्रश्नों पर विचार नहीं किया जाएगा।

जितेंद्र कुमार

मोबाइल न. : +91 81780 36134

ईमेल आईडी: nadiresearcher@gmail.com

Astrological Researches Group (Face Book)

दिनांक: 17 दिसंबर, 2017

नाड़ी-ज्योतिष कैसे सीखें?

ज्योतिष विषय में पाराशरी, जैमिनी, के.पी., नाड़ी आदि जैसी विभिन्न विचार-धाराएं हैं। जहां प्रत्येक विचार-धारा अपने आप में विशिष्ट है, लेकिन सभी का अंतिम लक्ष्य/गंतव्य अधिकतम सटीकता के साथ विश्लेषण करना है। ज्योतिष-विषय में नाड़ी-ज्योतिष सबसे पुरानी विचारधाराओं में से एक है, जिसकी पुनः कई शाखाएं हैं, जहां प्रत्येक शाखा एक विशिष्ट कार्यप्रणाली से संबंधित है।

हमारे इस विचार-विमर्श का मुख्य आधार मुख्यतः सप्तर्षि-नाड़ी, भृगु-नंदी-नाड़ी, मीन-नाड़ी आदि ग्रन्थ है। मीन नाड़ी मुख्यतः नवांश -पद्धति पर आधारित है, जबकि नंदी नाड़ी, सप्तर्षि नाड़ी और भृगु-नंदी-नाड़ी मुख्यतः "ग्रहों के कारकत्व" के अनुसार फलित पर आधारित हैं।

कुछ बुनियादी प्रश्नों को ध्यान देने की आवश्यकता है:

1. अयनांश: कौन से एक अयनांश का पालन किया जाना चाहिए?

वर्तमान में, मैं किसी भी भ्रम से बचने के लिए लाहिड़ी अयनांश का उपयोग करने की सलाह दे रहा हूं। वरिष्ठ-छात्र "सूर्य सिद्धांत" के साथ भी प्रयोग कर सकते हैं। ग्रहों की स्थिति भूकेंद्रित और मध्यम राह-केतु का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। वरिष्ठ छात्र अन्य विकल्पों के साथ भी प्रयोग कर सकते हैं।

2. मीन-नाड़ी के लिए, पुस्तक के अनुसार नवांश-विधि और अन्य नियमों का पालन करना चाहिए। बाद में, वरिष्ठ-छात्र अन्य तरीकों से प्रयोग कर सकते हैं।

3. भृगु-नंदी-नाड़ी और संबंधित ग्रन्थों (जैसा कि स्वर्गीय श्री आर. जी. राव द्वारा उपलब्ध कराया गया है) नए छात्रों के लिए पर्याप्त हैं। भृगु-नंदी-नाड़ी में, प्रत्येक "ग्रह के कारकत्व" को अत्यंत महत्व दिया जाता है। इसके अलावा, "प्रगति (प्रोग्रेशन)~Progression" और कुछ अतिरिक्त नियम ... जो कि मौलिक नियम हैं ... को मैं शिक्षार्थियों के साथ मेरी चर्चा में (पीडीएफ फ़ाइलें, ऑडियो और वीडियो व्याख्यान) पहले से ही साँझा करता आ रहा हूँ।

4. सप्तर्षि-नाड़ी भृगु-नंदी- नाड़ी के समान है, लेकिन सप्तर्षि- नाड़ी के अंतर्गत भावों को भी महत्व दिया गया है।

5. नाड़ी-ज्योतिष मे सिद्धांततः प्रत्येक ग्रह की जन्मकालिक स्थिति~ राशि/अंश-कला आदि उपयोग किया जाता है।

6. भृगु-नंदी-नाड़ी से सम्बन्धित ग्रन्थों में "लग्न" को अत्यधिक महत्व नहीं दिया जाता है। इसका अपना तर्क है, जिस पर मैं बाद में विस्तार से चर्चा करूँगा। एक बात मैं यह स्पष्ट करना चाहूँगा कि इसका अर्थ यह नहीं है कि "लग्न" का कोई महत्व नहीं है। अग्रिम स्तर पर और नाड़ी ज्योतिष को समझने के लिए और कुंडली के निर्माण करने के लिए "लग्न" की आवश्यकता और अपना विशिष्ट महत्व है।

7. विंशोत्तरी दशा प्रणाली का उपयोग पाराशारी, जैमिनी और के. पी. आदि परम्परा में सर्वविदित है। विंशोत्तरी दशा प्रणाली ही "प्रगति~Progression" का ही एक प्रकार है, जहां जन्मकालिक चंद्रमा की नक्षत्र-विशेष में उपस्थिति के अनुसार विशिष्ट-गणितीय प्रक्रिया के तहत चंद्रमा का "प्रोग्रेशन" किया जाता है। नाड़ी ज्योतिष में, इसी तरह ग्रहों का प्रोग्रेशन किया जाता है।

8. मेरी चर्चा में, मैं हमेशा नाड़ी-ज्योतिष को किसी ऐसे व्यक्ति से व्यवस्थित तरीके से सीखने का सुझाव देता हूँ, जो नाड़ी -ज्योतिष में शोधकर्ता हो।

9. नाड़ी ज्योतिष के सही उपयोग कैसे करें ?

इस प्रश्न के उत्तर में मेरा विचार है~ नाड़ी ज्योतिष को स्वतंत्र रूप से और अन्य पद्धतियों के साथ भी सम्मिलित करके भी उपयोग किया जा सकता है।

Astrological Researches Group

नाड़ी ज्योतिष को समझने और उपयोग करने हेतु प्रमुख चरण

सबसे पहले, नाड़ी-ज्योतिष की कौन सी शाखा और शाखा-विशेष के आधार पर विश्लेषण हेतु आवश्यक "अनुशासन / नियम" पर ध्यान दें। जैसे, मैं सप्तर्षि-नाड़ी, भृगु-नंदी-नाड़ी, मीन-नाड़ी आदि का अनुसरण कर रहा हूं, जहां:

- मीन-नाड़ी नवांश-पद्धति पर आधारित है जबकि,
- सप्तर्षि नाड़ी और भृगु नंदी नाड़ी मूलतः ग्रहों के कारकत्व पर आधारित है।

पाराशारी सिद्धांत के अनुसार प्रचलित विधि अनुसार कुंडली (मुख्यतः लग्न कुंडली) और प्रत्येक ग्रह से सम्बन्धित निम्न लिखित जानकारी नोट करें:

- भाव/राशि/नक्षत्र/अंशादि को नोट करें:
- प्रत्येक ग्रह गति की दशा (Direction & Condition): जैसे मार्गी, वक्री (Retrograde) या स्थिर (Stationary)
- गति (Speed) (दूसरे ग्रहों की तुलना में)
- अस्त (Combust) है या नहीं,
- ग्रह-विशेष के त्रिकोण (Trine) (राशि/भाव) में उपस्थित अन्य ग्रह,
- विपक्ष (सप्तम / भाव राशि ~ in Opposite) में ग्रह,
- ग्रहों के मध्य की दूरी (Distance between Planets),
- ग्रहों के म्युचुअल प्लेसमेंट (पारस्परिक स्थिति ~ Mutual Placement),
- अन्य ग्रहों से युति (in Conjunction with other Planet/s),
- नाड़ी पद्धति के अनुसार प्रत्येक ग्रह द्वारा अधिष्ठित राशि की दिशा की जानकारी आदि।

नोट: पिछले चरण को समझने के बिना, अगले चरण पर न जाएं।

अब, सभी ग्रहों को उनके द्वारा जन्मकालिक अधिष्ठित राशि के अनुसार संबंधित दिशाओं में व्यवस्थित करें। कुंडली (चार्ट) के विश्लेषण के लिए "प्रोग्रेशन" के साथ आगे बढ़ें। इस

क्रम में सबसे से पहले जातक के लिंग (पुरुष अथवा स्त्री) के आधार पर "जीव कारक ग्रह-बृहस्पति (पुरुष जीव कारक) और शुक्र (स्त्री जीव कारक)" का निर्णय करना चाहिए। आगामी अध्यायों में, ऊपर दिए गए सभी बिंदुओं पर सहायक उदाहरणों और चार्ट के साथ विस्तृत चर्चा की जाएगी।

नोट: गोचर (ट्रांजिट~Transit) को प्रोग्रेशन (Progression~ प्रगति) से आरम्भिक स्तर पर न मिलायें (मिक्स न करें), क्योंकि ये दोनों अलग-अलग अवधारणाएं हैं।

Astrological Researches Group

Nadi Sutras

Some Sutras/Rules which are already shared in discussion are:

Nadi Sutas: 1

Fundamentals of Nadi Astrology: "Planetary Mutual Exchange"

Planetary Mutual Exchange is an important fundamental of Nadi Astrology, which is given much importance. This Exchange can be of two types:

1. At Sign Level and
2. At Nakshatra Level.

Sign Exchange is effective only for 7 Planets (not to Rahu & Ketu), while at Nakshatra Level...Planetary Exchange is effective for all Planets.

At broad level, Sign/Nakshatra Level... Planetary Exchange can alter the results/ conditions ... what is shown by only Natal position of Planets in horoscope. In general, after Sign/Nakshatra Level Exchange, Planets being considered in own Signs/Nakshatras, are supposed to be benefic & strong (being in own Sign). For more detailed views, refer to ~ "Nadi Jyotish Vol 1 (Eng)" or "नाड़ी ज्योतिष, भाग 1 ई-बुक संस्करण ~ हिंदी संस्करण, अगस्त 2017)".

Nadi Sutas: 2

Fundamentals of Nadi Astrology: "Progression Theory"

There are some very important basic fundamentals of Nadi Astrology. The next Fundamental of Nadi Astrology is: "Progression". The term "Progression" is very common in Western Astrology. In modern Vedic Astrology, Progression is not dealt at big level, but in Nadi Astrology... Progression is a Basic fundamental. Further, "Progression Theory" is the supplementary/lost/forgotten part of Predictive Modern Vedic Astrology in practice now a day.

Progression is very broad term and holds further sub-division. Some common versions are:

1. Jupiter's Progression
2. Venus' Progression
3. Saturn's Progression
4. Rahu's Progression
5. Ketu's Progression etc.
6. Cyclic Order Progression
7. Moon's Progression (As Vimshotri Dasa)
8. Sudarshan Chakra* based Progression
9. Gulika Progression* etc.

Jupiter takes 12 years (approx.) to transit among 12 Signs, Saturn takes 30 years (approx.) and Rahu takes 18 years (approx.). Sun takes 1 year among 12 Signs. "Cyclic Order Progression" term, in general, is used for Jupiter's Progression. Further, there is one more division of Cyclic Progression where 12 years duration is governed by 1 specific Planet.

Further, next type Progression, which I purposed earlier is: Triple Transit (for Retro Planets). Members may check the concerned document in "Files" of "Astrological Researches" group.

Reference: "Nadi Jyotish Vol 1 (Eng)" & "नाड़ी ज्योतिष, भाग 1 (ई-बुक संस्करण ~ हिंदी संस्करण, अगस्त 2017)", available in PDF format, free of cost, in our FaceBook Groups:

Nadi Astrology (नाड़ी-ज्योतिष): Astrological Researches
<https://www.facebook.com/groups/266535793479406/>

Astrological Researches Group
<https://www.facebook.com/AstrologicalResearchesGroup/>

Astrological Researches: <https://www.facebook.com/groups/smmmjvsrk/>

Astrological Researches Group

Nadi Sutas: 3

Fundamentals of Nadi Astrology: Progression Jupiter (1)

In Nadi Astrology, Planet's Progression is given utmost importance. Jupiter is one of Key Planet and its Progression is key tool to judge to events. Transit Jupiter takes 1 year (approx) to travel a Sign and Whole Zodiac is traversed in 12 Years (approx). This 12 year duration is known a "One Cycle". So, on an average, considering 12 yrs*10 Cycles =120 years human age periods ...10 Cycles can be completed by Jupiter in maximum (in general). Here, important point to note that... same things/events will not get repeated after each 12 year's Cycle. Other Planets also Progress in same way with different durations.

Also, 1st cycle of 12 years (from Birth to age of 12 years) is ruled by Moon. Why Moon rules 1st cycle. Moon is Karka of:

- * Mother and
- * Nourishment

The age period from Birth to the age of 12 years is basically governed/ supervised by Mother and other family members. Here, native is mainly dependent of his/her mother for Food, Nourishment, Safety and Survival.

So, the 1st cycle of 12 years duration is mutually ruled Jupiter (Jeeva Karka i.e. Life, itself) and Moon (Mother). So, Moon's condition is Vital Factor. Also, Moon is Key Player in Panchang So Moon' dependent factors:

- * Tithi, Nakshatra, Yoga, Karna and other features need a close attention.

Nadi Sutas: 4

Fundamentals of Nadi Astrology: Progression Jupiter (2)

Jupiter + Moon: Ruler of 1st Cycle (1st day to 12 years duration)

Jupiter is Jeeva (or the native himself) and Moon is his Mother. A native needs in childhood: Nourishment, Encouragement, Support & Protection. Also, this Cycle governs "Primary Teaching". Like now a day... Schooling starts @ 2+ Years age onward....but in olden days...when Gurukulas were in practice.... Education took start at the age of 8 to 12 years onward. Further,

the 12th year is important to note because... it's the last year of the 1st Cycle. The 13th year onward, 2nd Cycle starts which is governed by Mercury (Karka of Education) up to the age of 24 years. So, 1st Cycle..... Jupiter and Moon need close attention.

Moon is fastest moving Planet....that transits all 12 Signs within 28 Days (approx.). Moon transits over Jupiter at least once in every month... i.e. Moon's fast movement and frequent meeting with Jupiter points immediate caring nature of Mother i.e. other who can be more careful than mother for her Kids?

Next, important is to check the condition of Natal Moon and Natal Jupiter. Any affliction of these two would affect the Childhood of native.

After, judging the natal condition of Moon and Jupiter.... next is to check the Progression of Jupiter i.e. when Jupiter will traverse over other Natal Planets. Here, need to understand the difference between Progression and Transit.

Nadi Sutas: 5

Fundamentals of Nadi Astrology: Progression Jupiter (3)

Difference between Progression and Transit of Jupiter:

Transit is the actual movement of a Planet as seen from the Earth. In Transit, Planets: Mercury, Venus, Mars, Jupiter and Saturn go retrograde also. Because of Retrogression periods, these Planets take more time to transit a Sign, in Comparison of the actual time they take to transit a Sign in Direct Motion. For example, Jupiter in Leo, entered on 8 Aug 2015 and reached at the end of Leo sign on 8 Jan 2016 i.e. just within 5 months. But, because of Retrogression on 8 Jan 2016, Jupiter started moving back (not real) and will leave Leo in Aug 2016 i.e. approximate in 1 year. Same like this, other Planets take their own time. Sun and Moon always move direct, while Rahu & Ketu always remain retrograde.

Note: Planet's Speed is crucial factor as per astrological point of view (not astronomical), which also need a close attention.

On the other hand, Progression is quite different from actual Transit (or we can say Live Transit). Under Progression, there are different models of application. As per study of various Nadi Texts, I first simply consider the Total duration or approximate time taken by a Planet to traverse whole Zodiac i.e. 12 Sign, like Saturn takes 30 years, Jupiter takes 12 year, Rahu & Ketu take 18 years, Sun takes 1 year and so on.

Jupiter takes 12 years to traverse though 12 Sign, here we consider 1 year per 1 sign. Further, with in a Sign, which compromise 30 Degrees span Jupiter takes 1 month to traverse 2 Degree 30 minutes. This way, we can calculate the Progression of Jupiter within Sign for Monthly basis. Further we can sub-divide this Progression up to Minutes or Seconds. For easy reference, one may incorporate D12 Chart formula.

Starting Point of Jupiter's Progression will be the exact Degrees at which Natal Jupiter is located in birth chart. This way, one may use Jupiter's Progression for Each Cycle (of 12 years duration). Same method can also be applied for other Planet's Progression. Saturn, Rahu & Ketu's Progression need close attention.

Nadi Sutras: 6

Progression: A new Sutra

Check events... Year/Month wise by Progressing each Planet for 1 Degree per year. For example:

Natal Planets A at 4 degree and B at 19 in same Sign, then Progress Planet "A" for 1 degree per year basis till it reaches Planet "B". Here, $19 - 4 = 15$ Degree distance between Planets A and B. So, Planet "A" would take 15 year to reach Planet "B". So, check any specific Event happened in 15th year? Also, if that event is related to concerned Karkas of Planets "A" & "B"? Further for minute calculation one may also calculate minutes and seconds.

Nadi Sutras: 7

Sun v/s Karkatva, Part: 1

Sun governs Father and Progeny. In Parashari methodology, Jupiter is said to be the karka of Progeny. When we follow KaalPurushaKundli, the 5th house is occupied by Sign: Leo, which is ruled by Sun and the 9th house is occupied by Sign: Sagittarius, which is ruled by Jupiter. Sun has only 7th aspect while Jupiter has 3 aspects i.e. 5th, 7th and 9th. Also, Lagna, 5th house and 9th house are in Trine to each other. What a native gets from his father i.e. 9th house is supposed to carry forward to his Progeny.

As per Hindu mythology, once is supposed to continue his Family Lineage to get free from PitruRuna (i.e. Ancestor's debt). This Family Lineage should be continued by means of Dharma. This term "Dharma" is justified by Jupiter (Devta's Guru). So, the lordship of the 9th house is attributed to Jupiter by means of Sagittarius Sign. Important point to note here is: Sagittarius is MoolTrikona Sign of Jupiter. So, the native himself is governed by Dharma i.e. Jupiter. Jupiter is also said to JeevaKarka (though Mercury and Ketu are also known as JeevaKarka as per Parashari System). The Purity of Soul i.e. Sun governed by Jupiter:

*******Sun (Father)>Jupiter (Native)> Sun (Progeny)*******

Any kind of affliction on Sun & Jupiter should be checked carefully to study the prospectus of Native's life, his Father and Progeny.

Nadi Sutas: 8

Sun v/s Karkatva, Part-2

Sun governs two different Living Entities in a native's life i.e. his Father and Son. It means native's Father and Progeny should have a same life pattern. But, this is practically not seen in all case studies. One's father might be short lived while Progeny may have long life. So, how to understand about these two different roles played by same planet: Sun?

Again, to understand this one need to follow the "Progression Theory". Here, one needs to Progress the "Sun" for both Father's condition as well Progeny's scope. With the help of Sun, one check about native's Father and Father related other issues also.

"In case of Father, Progress the Sun: "to and fro", while for Progeny, Progress Sun in straight direction."

Next, check:

- * The 2nd, 5th, 7th, 9th and 12th houses from Sun.
- * Planet in conjunction with Sun.

One more secret:

For Parashari method:

- * To know about Father: In native's horoscope..... Consider/Check Sun in D12 Chart. (Though, this method is already revealed and discussed in our Astrological Researches Group by me. One may check in File section. This method was proposed for those natives, who do not have their own horoscope!)
- * To know about Progeny: In native's horoscope.... Consider/Check Sun in D7 Chart.

Nadi Sutras: 9

Sun v/s Karkatva, Part-3

Why Doubt and Confusion over validity of astrological rules?

In many horoscopes, beside afflicted Sun, native are seen enjoying all comforts in respect of their Father and Progeny. This kind of situation results in doubts and confusion over validity of astrological rules.

Astrological rules/observations quoted in standard classical texts are not wrong statement. Only issue is: how an astrologer applies a rule. Sun v/s Karkatva (Father and Progeny)....if Sun is seen afflicted at Primary level, then it's not always necessary... Karkatva of Sun will surely get spoiled. Affliction cancellation some conditions can be like:

- * Sign exchange between Sun and other Planet.
- * Nakshatra Level exchange between: Sun and other Planet.

- * The Planet, who is afflicting Sun, might be involved with some other Planet in Sign/Nakshtra Exchange.
- * As per Progression Theory, benefic Planets may be supporting Sun.
- * Also, one should remember what we are seeing/ experiencing regarding a case study... i.e. is all shown facts should true? Many times, truth comes in light on later stages. Careful attention is required for IVF like case studies.

Nadi Sutras: 10

Sun v/s Karkatva, Part-4

Significations of Sun: Father, Progeny, Govt. related issues and Vastu Dosha:

Sun governs two different Living Entities of native's life i.e. Father and Son and other subjects like Govt. related issues, Life Force (प्राणशक्ति) etc. In Vastu, Sun governs Sun-light, East Direction and considered Strong in South direction.

If natal Sun is afflicted, then there will be strong chances for Vastu Dosha related to Sun or vice-versa. Important point to note down here is:

"There should be balance of different Vastu Elements by all means".

Any imbalance in one element will affect other elements, though some time....there would be nothing seen in direct vision. Also, whenever we analyse about a Karkatva, it's not necessary that concerned Karkatva will be fully damaged. Like, if Sun is afflicted... do not immediately predict that Father would be short lived. Here, one may have long live Father with good status. Then, in such conditions with afflicted or bad result:

- * Native may not be able to achieve that much success as achieved by his father.
- * Native may get failed to maintain the legacy forwarded by his father.
- * Native may suffer health issues related to organs governed by Sun or may have weak constitution of Sun governed body organs.

- * Native may face legal issues or trouble because of Govt.

- * Chances to harm reputation by enemies.

These conditions should be judged within light of other Planets.

Nadi Sutras: 11

Fundamentals of Nadi Astrology: Progression of Jupiter (3)

On name of Nadi Astrology, many things are in market. Many people have introduced their own versions of Nadi Astrology. So, one has to understand the difference between Classic Nadi Astrology and Modern Self claimed Nadi Astrology. There are different Schools of Classical Nadi Astrology like Saptarishi Nadi, Dhruva Nadi, Kumara Nadi, Bhrigu Nadi etc. Each School of Nadi Astrology follow their own rules like some stress on Nadiamasa, some on Navamsa, some on Progression etc.

Bhrigu Nandi Nadi (BNN) by Shri R G Rao based on Progression is the basic & excellent Nadi Astrology, which he made available with English translation. Progression term is very broad term and people use it very commonly. As per BNN, what I understand, there are four main Planets, whose Progression need special attention for broad level analysis of horoscope, they are: Jupiter, Saturn, Rahu and Ketu. Even, without Dasa and Transit, one can analyse some points from a horoscope effectively with the help of Progression of these said planets.

Jupiter is known as Jeeva Karka and act as the base of Life. When talk about Human being in astrology, then Male and Female nativity comes in role. Also, as per Hindu Philosophy, this present birth is resultant of Past Life Karmas. At base level, Jupiter governs both Male & Female being Jeeva Karka. Further on Gender base, Masculine characteristics are governed by Mars and Feminine characteristics are governed by Venus.

So, for Male nativity, one should look on: Jupiter + Mars & for female nativity, one should look on: Jupiter + Venus. This point is helpful to understand and analyse the about Twin Birth.

Nadi Sutras: 12

How to Progress Jupiter?

Simple approach is to look on: Natal Jupiter's Sign and Degrees in Lagna Chart. Jupiterian Progression starts from the Sign, in which natal Jupiter is sitting in Lagna Chart and its duration is supposed to be of 12 years i.e. Per Cycle per 30 degree per 12 Year (or 2 ½ Degree per year).

So, first of all, need to check the degree of natal Jupiter and check how much Degrees Jupiter had already transited at the time of birth. This point will act as the Base/Starting point of Progression. For example, natal Jupiter is at 5 Deg in Aries, and then 25 Deg are pending to transit after birth. Here, remaining 25 deg will be transited by Jupiter within 8 to 9 months (approx).

But as per Progression, 25 Degrees will represent 10 years of future Progression within same Sign. After 10 years Progression, next 12 year cycle will start from next Sign.

Here, Should one follow Sign based Progression or Bhava based Progression? This question is for members.

See old posts: Fundamentals of Nadi Astrology: Progression Jupiter (1) & (2), March 3, 2016 dated below in group.

Nadi Sutras: 13

Planet in own Sign ~ Minimum changes in Life:

A planet is considered strong and benefic in own sign & such planet, in own sign, in natal chart indicates strong @ its characteristic related to its Karktvas/Qualities. This also indicates that, in general such planets will give minimum changes in life because of their own strong characteristics. This is an important rule of Nadi Astrology and this same rule can be applied in parashari and other systems also. Here, rule is helpful to understand about nature of concerned native.

One important point to note here: If there is any affliction on Natal Own Sign placed Planet, the negative influence will also result at its maximum adverse.

Nadi Sutras: 14

Fundamentals of Nadi Astrology: Part 4

Jupiter with Ketu and Impatient Nature of Nature:

This is a quote from Nadi Texts, under Translation and Research with me.

Jupiter with Ketu makes native of impatient nature. Here, Jupiter is Jeeva and Ketu is Higher Knowledge. The purpose of Jeeva is to know about his existence in this Universe (or MahaPrukriti). Jupiter is Karka of Expansion, while Saturn is Karka of Limitations (Being outer most planet). To know about purpose of this life, Jeeva need to look beyond the Material World Limits. This results into Impatient Nature of Jeeva, when Jupiter makes contact with Ketu in Natal Chart. Whenever such native sits to study, always pick two or more books and always keep on searching for best or something new!

Saturn's influence on this conjunction of Jupiter & Ketu causes more disturbances in material duties. Sudden Changes can be expected during Jupiter's transit over Ketu, Saturn's transit/aspect on Ketu, Jupiter's transit before, over & after natal Saturn.

Some other conditions, Diseases, Curse and further impacts can be discussed, if members find this effective.

Nadi Sutras: 15

Fundamentals of Nadi Astrology: Part 5

Sun in the 4th or 11th house from Moon & Gains to father from his In-Laws! (Only a view).

Check this view: If natal Sun is in the 4th or the 11th house from the natal Moon, there can be possibility of Gains to native's father from his In-Laws! This is an important point which need attention as well verification on more charts, where native's father has been benefited because of In-Laws by this or that mean.

- * Sun is father.

- * Moon is Mother

- * Venus has a secret role there.

Here, nature of Gain will be dependent of:

- * Moon's placement as well condition and also condition of 4th house from natal Moon.
- * Placement of Venus with respect to Sun.
- * Placement of Jupiter with respect to Sun.

Nadi Sutras: 16

Fundamentals of Nadi Astrology: Part 6

Karka judgement is the Key Rule of Nadi Astrology. In SaptarishiNadi, many rules are scattered here and there. Like Sun is Karka of Father. So, Sun would be the Planet to know about father. In SaptarishiNadi~VirgoAsc for Chart: 1 (Pub. GOML, Edited by Late C G Rajan):

1. Sun is with Venus and Mercury in Aries Sign in the 8th house.
2. Saturn is in 2nd house from Sun, in the Gemini Sign in the 9th house.
3. Mars and Ketu are in conjunction in Pisces Sign in 7th house.
4. Sun is aspected by Jupiter in Leo Sign from the 12th house.

Sun in its Sign of Exaltation (i.e. Aries) with two natural benefics as well aspected by natural benefic Jupiter. So, the father of this native with Virgo Asc would be educated, noble person, well known and will have all comforts.

Saturn in 2nd from Sun, so, in childhood, the native's father might had to struggle or to live a tough life, though such person maintain secrecy as well may have different temperaments inside and outside of the house. Saturn being Karka of hard work, Native father might work in Agriculture or some field where Services may be requested. But, important point to note here is Karka of father i.e. Sun is strong and in benefic aspects. So, native's father would be able to have respectable profession as good status in society, he would be interested in root level works.

Mars, Karka of Siblings, is with Ketu. Father could have many siblings, but lack of benefic on Mars &Ketu (only aspect of Rahu), made doubtful for longevity of Siblings.

Nadi Sutras: 17

Fundamentals of Nadi Astrology: Part 7

Previous life of the native!

Karka judgement is the Key Rule of Nadi Astrology. In SaptarishiNadi, many rules are scattered here and there. Some rules are in much coded form. Friends may try on this:

How to check Previous life of the native?

Nativity is governed by Jupiter. To check Previous life of the native from present horoscope. Simply, shift the planet ~ Jupiter in its immediate previous House from its present natal position.

Like, if one is born with Jupiter in Leo Sign (Example from Saptarishi Nadi, Virgo Asc, Chart:1, GOML, Edited by Late C G Rajan). To check about previous life of the native, place Jupiter in its previous Sign i.e. Cancer Sign in example Chart.

Cancer Sign governs North Direction. There is needed to keep some logics secret to avoid misuse. Why to check previous life? It is helpful to look the causes of sufferings, though it's a little tough job.

Nadi Sutras: 18

Fundamentals of Nadi Astrology: Part 8

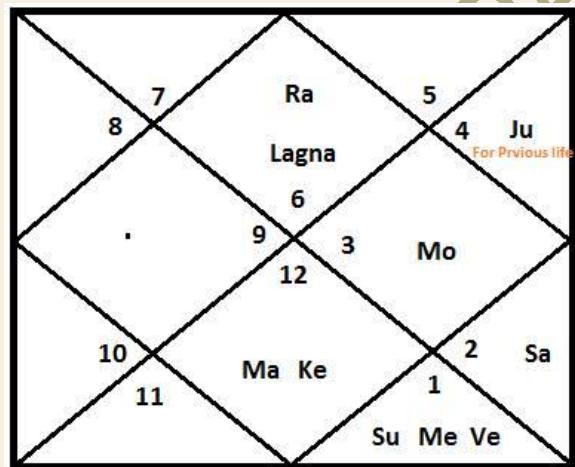
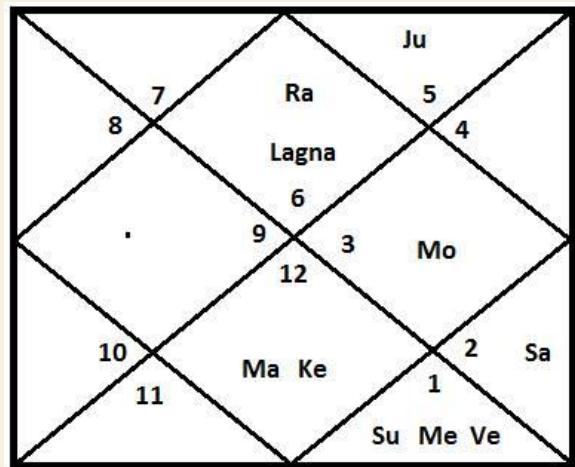
Native was an occultist in previous birth!

Saptarishi Nadi, Virgo Asc, Chart 1 (GOML, Edited by Late C G Rajan).

This native, in previous life, was an expert of Black Magic and was practicing the same to get free a person from evil spirits! Native had good name and fame by that profession.

Here, shift Jupiter to its previous house to check for previous life. After shifting, Jupiter goes in Cancer Sign, Exaltation Sign for Jupiter. (See second chart). With this chart, past life sins and bad results coming in future life can be studied, but not so easy.

Also, in present birth, native would have two wives (See first Chart).



Nadi Sutras: 19

Fundamentals of Nadi Astrology: Part 9

Check for following observation (an observation only):

Whenever in a nativity:

- * Saturn is with Moon or
- * Both are in Trine or
- * Moon is in any adjacent house of Saturn.

Such native have major role of Water or Liquid in his/her Professional life.

Nadi Sutras: 20

Fundamentals of Nadi Astrology: Part 10

Venus: Karka of Wife, Laxmi, Money, Wealth and an Astrologer.

In Internet Yuga, everyone is free to comment/write what he wish or think right according to his/her perception. *Some people say, astrologers have curse on themselves! Some say, an astrologer should not charge fee! etc etc.*

As per Nadi Text's, it's the Venus who is Karka of:

- * Wealth
- * Comforts and
- * Wife (as Female Nativity).

Jyotisha learning/practice is not a one day Job. It needs a lot of patience as well time to attain perfection. It involves lot of Research Work as well Sadhana (i.e. an Astrologer should be a Stoic ~ जितेन्द्रिय). He must be profound and skilful in Astronomy, Vedanta, Mathematics and Philosopher.

When an astrologer is supposed to have such qualities, then it means, his/her family members have to give him/her more freedom for astrological works. Here, if astrologer marries, the Spouse has to sacrifice more on account of support from partner.

So, indirectly, an Astrologer becomes indebted. Further, as per mythology, one should try his/her best to free from all kind of Debts.

Sorrows cannot be shared, but Wealth cannot be enjoyed alone.

If an Astrologer is not taking care of his close ones, who have/are supporting him/her for his astrological doings, then indirectly he/she accumulates Karmic Debts. So, an Astrologer must give in return respect his/her spouse, parents, family members and close one.

If his wife is happy with him, goddess Laxmi will also be happy.

If his Parents are happy with him, Sun & Moon will be favourable.

If Co-born and friends are happy, Mars will be favourable.

If relatives are happy, Mercury will be favourable.

If Guru is happy, Jupiter cannot be harmful.

If Servants are happy, Saturn will allow him all comforts.

If Security guards, Sweepers are happy, Rahu & Ketu* will be favorable.

So, an astrologer should try to be debt free. Also, one should check for Sins/Karmic debts carry forwarded from previous life.

Nadi Sutras: 21

Fundamentals of Nadi Astrology: Part: 15

More than one Partner in Life!

In Parashari System, the 7th house governs 1st wife and the 9th house (or some people consider 2nd house) for 2nd wife.

As per Nadi Texts, Venus is the main Karka of Wife i.e. First Wife. There are 2 more feminine Planets:

1. Moon and

2. Mercury (though personally, I consider Mercury as a conditional feminine Planet. Also, Mercury is known as Eunuch).

So, in total we have 3 Feminine Planets: Venus, Moon and Mercury. Whenever in a male horoscope, Venus is linked with other feminine Planet/s, and then there would chances for 2nd wife (or other woman) in life. Another But, important point for this is to use correct Panchanga. Lahiri Aynamasa based calculation are not seen correct in many cases. Sign-

Exchange and Conjunction are two important conditions. Also, concerned nativity karka should be linked to both directly or indirectly.

- Venus for 1st wife.
- Mercury for 2nd Wife.
- Moon for 3rd Wife.
- Also, Moon and Mercury further have their own status.

Nadi Sutras: 22

Fundamentals of Nadi Astrology: Part: 16

Saptarishi Nadi, Virgo Asc, Chart: 2

(Pub. in Tamil by GOML, Edited by Late C G Rajan)

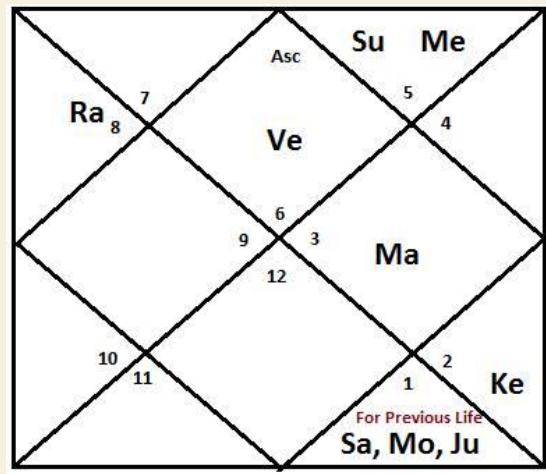
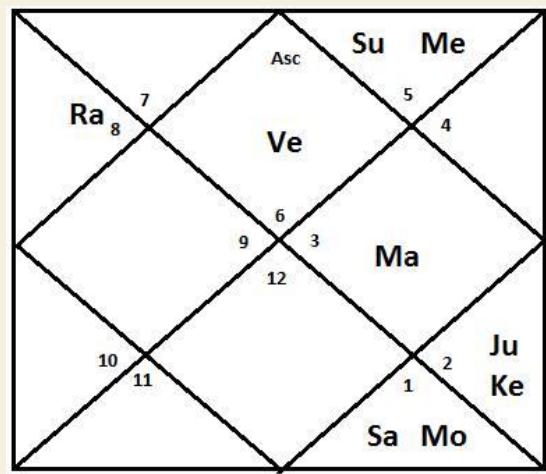
Native will be Male. Street will be running from East to West, house will be South facing, born in small village in father's home.

Native's father will have 7 Siblings. (Sun is Karka of Father, so Sun's Progression need to be checked here).

Native's will have strong will and research mind, agriculture profession, respect by relatives and in famous in society.

Native's father health: Pitta Prukruti, Plies and mark on Shoulder.

Native's father will lack unity and peace with his siblings. Why? Look on Sun: Karka of Father. Mars is Karka of Sibling, placed in Gemini sign, whose Sign dispositor Mercury is with Sun. Mars is aspected by Saturn, where Saturn is in its debilitated Sign with Moon. Mars lack any benefic aspect. Sun + Mercury + Saturn + Moon are in same direction. Saturn has spoiled both Mars (by aspect) and its Aries Sign (by presence). So, house (Aries sign) and house-lord Mars, both, are afflicted by Malefic Planet - Saturn. Severe afflicted condition of "Mars" indicates lack of Unity and Peace with his Siblings.



Nadi Sutras: 23

Fundamental of Nadi Astrology: Part 17

A Planet can spoil at least one Karkatva..... Check this point (a view)!

Whenever the Exaltation Sign of a Planet (say: Planet "A") is occupied its dreaded enemy Planet (say Planet "B"), then there will be strong chances that the One Karkatva of Planet "A" will get spoiled. If in above condition, both Planets: A & B are in Trine at the same time, and then adverse results would be sure. Like:

* Aries is Exaltation Sign of Sun, if Saturn is placed in Aries, then it can spoil one karkatva of Sun!

* Aries is Exaltation Sign of Sun, if Saturn is placed in Aries and Sun in Sagittarius, then it can also spoil the one karkatva of Sun!

Nadi Sutras: 24

Fundamental of Nadi Astrology: Part 17 (New Edition)

A Planet can spoil at least one Karkatva..... Check this point (a view)!

Whenever a Planet (say: Planet "A") is exalted and its own Sign is occupied by its dreaded enemy Planet (say Planet "B"), then there will be strong chances that One Karkatva of Planet "A" will get spoiled.

Like, Sun is in its Exaltation Sign: Aires and at the same time, Sun's Leo sign is occupied by Rahu/Saturn, then it can spoil one karkatva of Sun!

Moon is exalted in Taurus Sign and at the same time, its own Sign Cancer is occupied by Rahu/Saturn, then adverse results related to Moon's Karkatva is possible.

Nadi Sutras: 25

Fundamental of Nadi Astrology: Part 18

Saturn with Moon or Moon under influence of Saturn ~ Old/Poor Lady or Mother's curse from previous life (Only a view):

Saturn + Moon conjunction is known as विषाद-योग or like Nostalgia. Moon is a Feminine Planet. So, in case of Saturn + Moon conjunction of Saturn's influence on Moon can cause विषादयोग or like Nostalgia conditions as well native some time can experience dual nature... one side very disciplined and other side in secret way ~ very insecure, lethargic behaviour as involved/interested in wrong doings also. Some time; very sensitive; caring and helpful beyond the limits. But, if such person once gets angry, he does not care for the loss and break the relations totally. Such person deals more emotionally and addiction for certain things which increases expenses. All these conditions could be a result of Old/Poor Lady or Mother's curse for this or that reason. Native has to careful with in his

relationship with his/her mother, diseases related to Kidney, Urinary Tracts, all Glands and Lungs.

This could affect the native both at physically as well mentally. Childhood i.e. up to 12 years age frequent health issues could be possible.

The above said views are of general nature. In some cases, results may be less/no effective. So, for any final conclusion, along with Conjunction of Saturn + Moon, one should also check for following points:

- Mutual Placement (which one is ahead and applying/separating aspect?)
- Distance between both
- Is Saturn retrograde? If yes, applying or separating aspect?
- Sign occupied by them in Lagna Chart
- Both's placement from their own signs. This is one of the most important factors which need special attention.
- In case of adverse results, native has to be cautious about his/her behaviour/mentality.

Nadi Sutras: 26

Fundamentals of Nadi Astrology: Part 20

Constellations (Nakshatras) have their own individual nature and characteristics. But these things vary according to the situation and merits of the Constellation Lord.

Nadi Sutras: 27

Fundamentals of Nadi Astrology: Part 20

Birth Nakshatra and Scope of Remedies:

Many people wander here and there for remedies, but neglect the roots from where a nativity gets nourishment. The Birth Nakshatra is Roots of a Nativity. Which Nakshatra one should consider as Birth Nakshatra:

1. Lagna's Nakshatra or

2. Moon's Nakshatra.

Moon's Nakshatra should be given importance in remedies (उपाय और प्रायश्चित). Lagna Nakshatra is also given conditional importance.

Check for the Deity of Nakshatra @ Planet lordship as well Adhidevta.

This holds the Key for remedies (उपाय और प्रायश्चित). In need, one should try to check for possible remedies according to the Birth Nakshatra's Planet lordship as well Adhidevta of that Nakshatra.

Like Kritika Nakshatra, @ Planet lord: Sun and Adhidevta Lord: Kartikeya or Subramanyam, eldest Son of Goddess Parvati and Lord Shiva.

Nadi Sutras: 28

Fundamentals of Nadi Astrology: Part 21

Each Constellation governs a portion of Body. If a Constellation is occupied by Malefic (and also has enmity with Constellation Lord)..... it may cause Varna, Surgery or Accidental injury to the body part governed by that constellation.

Like Shravana Nakshatra governs Genitals, if malefic planet likes Saturn or Rahu or Ketu is present in Shavana Nakshatra, can result into Wound or Surgery or other injury in Genitals. This type of conditions should be checked very cautiously because in case of benefic influence, such negative harms get nullified or the sufferer gets timely treatment/required remedial measures.

Nadi Sutra- 29

Natal Retro Saturn indicates the Fast Execution of KarmaPhala.

Such a person should keep trying to achieve their goal, without being idle. Otherwise, the time again brings those goals back to face, and then either they have to try again or may have to experience the feeling of lack of incompetency or failure.

Nadi Sutras: 30

Mesh Rashi in KaalPurushaKundli indicates the start of Life i.e. "Birth". When Soul (Sun~प्राण) enters into Mars (Body~शरीर), Jupiter (Jeeva~जीव) come into existence..i.e.

Trine Combination of "Aries~Leo~Sagittarius"... Dharma (धर्म से जीवन -मूल्यों की रक्षा होती है).

That's why; Sun is considered Exalted in Aries Sign (First Sign of Kaal Purusha Kundli)... because without Prana (प्राण) in Body (शरीर), there is no existence of Jeeva (जीव).

Physical Body is governed by Mars i.e. Composed of Tamo Guna. Further, Sun is Soul Karka to offer a Satvik Place/Environment to Soul i.e. inside the Physical Body ... Jupiter by means of Dharma (धर्म)... tries on regular basis to cleanse the Body by means of Sanskars.

Nadi sutras: 31

Fundamentals of Nadi Astrology: Part 22

- * Sun ~ Rahu Conjunction/Relation in a Sign indicates special role of Grandfather/Grandparents in native's life.
- * This also indicate SarpaDosha (conditional) or some activities which involve Sarpa (Snake) influence in life of native's Grandparents.
- * This also hints adoption like condition in lineage of native.
- * Also, hints about death of Grandfather.

Nadi Sutras: 32

Saturn is Action & Venus is Prosperity.

Nadi Sutras: 33

Fundamentals of Nadi Astrology: Part 23

* Ketu ~ Termination of Karma or Obstacles

Over which Planet, Ketu Transits, results in Termination of Karma (Materialistic Growth gets affected) or Obstacles for that Planet.

Nadi Sutras: 34

As per Nadi Sutras: 32 ..//Saturn is Action & Venus is Prosperity//. Further to this... Action Taken i.e. Work done is the result of Saturn, while the Enjoyment of Result is ascribed to Jupiter because Jupiter governs Nativity.

Now there can be many Permutations & Combinations of according to Planet's Strength and Planets joining them in any mean.

Like, a Native opened a Shop and stared doing good business for life long or...Like one day, his father asked him to hand that shop to native's younger brother and further asked to him join other business with him (father's business). So, here what happened?

Nadi Sutras: 35

If Jupiter is only aspected by Saturn:

Such native would incur abject poverty in his childhood, but in second half, would acquire wealth in old age!

Nadi Sutras: 36

Moon & fruit of Journeys:

When alone Moon is in a Fixed Sign (स्थिर-राशि) and also aspected by Two Malefic.... this will result in Futile Journeys to distant places. In last, such native returns to his birth place empty hands.

Check this rule in Lagna as well "Prashna" Charts related to abroad travelling & share your feedback.

Nadi Sutras: 37

Saturn (Profession) + Sun (Father/Son/Govt.):

In conjunction of Saturn + Sun; it is said; native will join Govt. Job; but this is not found true in many case studies.

- * Sun governs Govt./Father/Son etc.
- * Saturn governs Karmas.
- * Strong Sun indicates favour/support from Govt.
- * Strong Saturn indicates Ethics and Discipline at Work Place.
- * If Saturn is combust... lack of tuning with Father, though Father will be influential in native's life.
- * Native may join father or work under father's guidance.
- * Sun is behind Saturn... possibility to work with Govt.
- * Sun is ahead of Saturn... Son will join his Father's Profession or will under father's guidance.

Nadi Sutras: 38

Mars+Sun ~ close conjunction: Do or Die mentality!

When Mars + Sun ~ Mars is closely combust as well no other influence... Such Native/Father/Brother may be Straight-Forward in nature, Arrogant or may also develop a "Do or Die Mentality". Share your feedback.

Nadi Sutras: 39

- 1 * TheBhavas,
- 2 * TheBhava Lord,
- 3 * The Signs,
- 4 * The Sign Lord &

5 * The Ascendant

6* The Karka (Significator) are Key Tools in Parashari System, but in Nadi Astrology, 1, 2 & 5 points are not given importance, while 3 & 4 points are given minimum importance. Only the Karkas (Significators) are given utmost importance. Only Karkas are considered in the Driver's seat.

Nadi Sutras: 40

चंद्रमा + शुक्र = राजयोगकारक !!

चंद्रमा व्यय का कारक जाना जाता है, जब कि शुक्र धन का कारक माना जाता है। यदि धन का उपयोग बुद्धिमता से किया जाये तो ऐसा जातक राजा या राजा तुल्य हो सकता है। पती और संतान सम्बन्धी पूर्ण सुख मिलता है। सभी प्रकार के सुख साधन उपलब्ध होते हैं।

With Reference to my Post dated 20 May, 2017

///चन्द्रमा की अन्य ग्रहों से युति:

चन्द्रमा मन का कारक माना जाता है। चन्द्रमा की अन्य ग्रहों से युति मन :स्थिति को किस प्रकार प्रभावित कर सकती है, इस पर विचार इस प्रकार है:

* चंद्रमा + शुक्र = धन की बर्बादी, रोक-टोक, असंतुष्टि।

चन्द्रमा और शुक्र~ दोनों जल तत्त्व के प्रतिनिधि हैं। चन्द्रमा और शुक्र की युति सामान्यतः अशुभ फलप्रद मानी जाती है, ऐसा जातक व्यवहारिक और अनुभवशील होते हुए भी परिस्थितियों के असहाय महसूस करता है, जिसके परिणाम स्वरूप मन कुंठित सा हो जाता है और अंतरंग सम्बन्ध /सुख औसत दर्जे का होता है। दिखावा बहुत होता है, लेकिन अंदर से खोखलापन होता है।

खर्च अधिक और आमदनी सिमित होने की संभावना रहती है।///

उपरोक्त विपरीत परिणाम किस किस प्रकार की ग्रहस्थितियों (चन्द्रमा और शुक्र की स्थिति) में हो सकते हैं ?

Nadi Sutras: 41

Fundamentals of Nadi Astrology: Part 24

Mercury as: Male or Female~ When?

Mercury is known as Eunuch Planet or in better sense... Mercury should be considered as "Hermaphrodite (द्विलिंग)".

Mercury without Sun (i.e. out of Combust Range/Degrees) acts as female!

Mercury has a specialty that:

The angle of the maximum elongation (east or west) for Mercury is between 18° and 28° . Within range of 14 Degrees with respect to Sun is considered as Combust.

Nadi Sutras: 42

Explore this Sutra From Chandra Kala Nadi:

रंध्रेशांशेतल्लिकोणेस्फुटयोगांगतेशनौ।

पितामहस्यनिर्णयिपद्यभविष्यति॥

Means:

Check the Navamsa Sign occupied by the 8th Lord. When Saturn Transits in the "Sign"; identical with Navamsa Sign (or its Trine Signs) occupied by the 8th lord... Grandfather's death or sudden damage or distress; a disaster may possible.

Nadi Sutras: 43

Spouse' Health!

Check Saturn Transit in Navamsa Sign (or its Trine) occupied by Natal Venus may indicate Physical Sickness or Evils to Spouse or In-Laws.

Nadi Sutras: 44

Walking Slowly in Childhood!

If Venus is aspected by Saturn in Natal Chart & also Venus is placed in Navamsa of Saturn.... such native walk slowly in childhood days!

Also check the Walking Style in Young age to confirm the applicability of Rule.

Nadi Sutras: 45

Family Circle & Status:

There are mainly four Planets who govern "Family Circle & Status". Planets and concerned Family members are as Follows:

1. Rahu ~ Paternal Grandfather
2. Sun ~ Father/Son
3. Ketu ~ Maternal Grandfather
4. Jupiter ~ Native (Himself)

Nadi Sutras: 46

Natal Mars in eunuch Planet's Signs:

Saturn & Mercury are known as Eunuch Planets. Though Mercury governs Childhood or young age and Saturn governs old age.

- * Mars in Gemini/Mercury Sign indicates good writing skills like Heroic poet (वीररस का कवि)!
- * Mars in Capricorn Sign indicates good management/leadership qualities at back end (Good at war-room strategies planning ~ War Room Strategist (युद्ध कक्ष रणनीतिक))!

Nadi Sutras: 47

Venus (Wealth/Wife/Elder Daughter/ Elder Sister) + Ketu:

Indicates of:

- * Suffering because of Quarrel/Dispute in domestic life!
- * Interest in Spiritualism!
- * More Expenses/Losses!
- * Independent Nature.

Also check above rule for, if there is no other Planet in between Venus and Ketu like condition.

Nadi Sutras: 48

For Researchers!

- * Movable Signs: Rajsik Nature (Active, Agitated)
- * Fixed Signs: Tamsik Nature (Inactive, Stubborn, Self centred)
- * Dual Signs: Satvik Nature (Introverted, Intellectually inclined).

Nadi Sutras: 49

Three Goddesses~

- * Parvati ~ Moon + Saturn
- * Sarswati ~ Mercury + Ketu &
- * Laxmi ~ Venus +Mercury

According to Natal Planetary combination/s one chose to worship as Ishta Devi!

Education as well Professional field along with monetary benefits can be checked from above said views.

Nadi Sutras: 50

Ketu ~ The Independence Karka !

- * Ketu symbolise Flag.

Flag is Authority, Independence, Presence, Height, Growth etc.

- * Ketu symbolise Freedom as well Patriotism.
- * Ketu symbolise Independent Nature at Work Place.
- * Ketu symbolise Spiritual Growth (Free from temptation)

Views: When Rahu's Head was cut by Lord Vishnu, Head remained by Sky, but Body fell down on feet of Lord Vishnu!

Who has surrendered to God... What kind of fear ... he/she will have?

Nadi Sutras: 51

Check: Wife's Nature

Venus + Sun ~ Talented Wife

Venus + Moon ~ Beautiful Lovely Wife

Venus + Mars ~ Learned Wife with Good sense of humour

Venus + Mercury ~ a Caring Wife

Venus + Guru ~ Wife... a Well-wisher

Venus + Saturn ~ a Hardworking/Professional Wife

Venus + Rahu ~ Wife of luxurious Nature/Desires

Venus + Ketu ~ Wife.... interested in Spirituality!

Check: Venus + Ketu ~ Venus in Ketu's Nakshatra or Ketu ahead or Venus in same in same Sign or in next Sign...

- * can affect the Marital Happiness.
- * Possibility for early age whitening of hairs.
- * Cheating in relationship.
- * Skin allergy
- * Fiery incident

* Mischievous acts

Nadi sutras: 52

गृहस्थ जीवन और पञ्चमहायज्ञः

पुराणों के अनुसार गृहस्थों के यहाँ जीव हिंसा के पांच स्थान कहे गए हैं:-

1. ओखली
2. चक्की
3. चूल्हा
4. झाड़ू और
5. जल रखने के स्थान।

उपरोक्त हिंसा दोषों से मुक्ति पाने हेतु गृहस्थों को निम्न पांच महायज्ञों को नित्य करना प्रशस्त माना गया है:-

१. ब्रह्मयज्ञ ~ अध्ययन और अध्यापन
२. पितृयज्ञ ~ तर्पणादि
३. दैवयज्ञ ~ देवताओं के निमित्त हवन आदि
४. भूतयज्ञ ~ बलिवैश्वदेव कर्मतथा
५. अतिथियज्ञ ~ अतिथि और अन्य अभ्यागतों का स्वागत-सल्कार करना।

Nadi Sutras: 53

Change in Century (शताब्दी) (article dated: 4 June 2015)

"Moon & Water's Commercial and Strategic Importance"

This present Century 2000+ has first number 2, while 1900+ had first number 1. Number 1 is a masculine nature (Sun) while 2 is of feminine nature (Moon). Moon will be the ruler of Century 2000+. So, there Moon

will be more prominent during Century 2000+. The things related to Moon will be more active. Feminine forces will be more active. Moon's basic character is as "Receptor" and further acts as "Converter/Modifier" and also acts as "Reflector".

Sun is the ultimate source of Energy which governs our Solar System. Sun act as "Active Source of Energy", while Moon act as "Passive Source of Energy".

During Century 2000+.... Moon as Karka of "Water i.e. Sea, Rain, River, Specially Drinking Water" will have a special say.

Like in India, Cleaning of Holy River Ganga has become a prominent agenda of this present Govt. PM Narendra Modi has given personal attention on this matter.

Also, Sea/River/Water will have a special say on general public's life. Though Sea and River were also effective mode of transportation in past Centuries but in Present Century, at Global level...Sea/River/Drinking water will be "Key Point" @ Commercial and Strategic Level. Sea/River related disasters like Sunami/Flood/Drought may affect human life.

Those Countries which would be able to Explore, Protect and Manage their Water Resources in all means very effectivelywill be the next Super Powers of this Century.

Naval Forces will be more prominent during this Century. So, at strategic level, Countries with advanced Naval Capabilities will be prominent. Exploration of Minerals and Nutrients under Sea will be next level of Commercial Exploitation.

Nadi Sutras: 54

Fundamentals of Nadi astrology: Part 10*

How to proceed when Saturn is conjoined or in trine or in adjacent to more than one planet?... Question by a group member:

"Progression" is the ultimate method/reply for above question. Progression can follow in following ways:

1. As per Transit (Degree wise) &

2. As per Cyclic Order Progression.

* Transit means simply the current position of a Planet i.e. Time wise (Date & Hours) & Degree wise (Sign/Nakshatra/Bhava) or we can say time taken to transit a Sign. Here, Retrogression needs special attention.

* Cyclic Order Progression means the total time/year taken a Planet to transit whole Zodiac, like Jupiter's Cyclic Progression is of 12 years; Saturn's Cyclic Progression is 30 years. From the Natal Position, like Jupiter is moved 1 Year/Each Sign, further one check Sudarshan Chakra Dasa method shared by me in Astrological Researches Group.

There is one more method for Cyclic Progression, where each cycle of 12 years duration from birth is governed by a specific Planet.

Further, Psynodic Cyclic movement one can consider.

"Planets in Trine" are considered in "Same Direction" (except a retro Planet). Planet/s in opposite house (i.e. in 7th house).... directly influence the results of concerned Planet. Planet/s in Adjacent houses also affect by means of Shubh Kartri or Paap Kartri means.

Planets within same Sign/Bhava should be checked/ analysed by their Degreewise Placement. You may check my article on "Triple Transit of Saturn". If anyone wishes more discussion on same can talk over phone.

Nadi Sutras: 55

The Path of Life & Ketu!

Dharma, Artha, Kama and Moksha ~ are the four limbs of Human Life which define the Way of Living. In Nadi Jyotisha, Signs are also categorized to understand the "Way of Living by means of Dharma, Artha, Kama and Moksha, which follows as:

1. Dharma: Aries, Leo & Sagittarius (Fiery Nature Signs)
2. Artha: Taurus, Virgo & Capricorn (Earthy Nature Signs)
3. Kama: Gemini, Libra and Aquarius (Airy Nature Signs) &
4. Moksha: Cancer, Scorpio & Pisces (Watery Nature Sign).

Now check, in which Sign ~ Natal Ketu is present in Lagna Chart. According to sign occupied by natal Ketu; check for the "Way of Living by means of Dharma, Artha, Kama and Moksha. Further check, towards which sign/s, Ketu will progress during its upcoming Progression Cycles.

For example: 1 ~ Natal Ketu in Aries Sign. Aries is Dharma (Duty), Movable & Fiery Nature Sign. Such person would of obedient nature but of Fiery Nature (तेज प्रतिक्रिया), Intellectual but Open hearted (खुले दिल वाला), Extra Cautious & Religious etc. The Path of Life & Action would be according to Dharma. There would be possibility of little modifications in Action, according to other Planet/s which influence/aspect Ketu.

For examples: 2 ~ Ketu in Libra Sign. Libra is Kama Rashi, Movable and Airy Sign. Now, Ketu itself is Moksha Karka but present in Kama Bhava. So, Kama (or Beauty) may be Key-Area in such case.

Note:

1. Jupiter governs Male Nativity (Jeeva) & Venus govern Female Nativity. Jupiter/Venus will look on Ketu to know about the Path of Journey of Life!
2. Though, Saturn is Profession Karka, but @Subtle Level, it's the Ketu + Jupiter who influence the Saturn/Karmas.
3. Ketu means Termination of Karma i.e. No Karma Dosha/Bandhan. So, it's Ketu... who Keeps watch on Jeeva (Jupiter/Venus) and Profession (Saturn).

Nadi Sutras: 56

No or less or Weak planets in own signs: Frequent changes in Life

This rule is opposite of earlier said Nadi Sutras: 13. As per this rule, in natal chart, if there are less or no or weak planets in own Signs, this results into frequent & sudden changes or up & down in life. This may results into frequent transfer in job, issues in life etc.

Nadi Sutras: 57

Mars + Venus Conjunction v/s Venus + Mars Conjunction!

Regarding fundamentals of Nadi Jyotisha, one can watch Video lectures and can read Nadi Jyotish Vol 1 PDF Book.

Conjunction of Mars + Venus, in general, is known as Active Sex Yoga. But, it's only one aspect of this Conjunction which if wrongly interpreted can mislead and the spoil the nectar of Jyotisha. Other aspects are:

1. Mars & Venus ~ Where Venus governs Property/House while Mars governs Land. Venus is Karka of Wife as well Wealth. In general, it's the Wife who manages the House and for this she needs money! A House (Venus) is built on Land (Mars). One may ask the question... What to consider for Floating Houses (On Water or in Air)!
2. Mars and Venus are Samsaptaka (1-7) or we can say Opposite to each other as per Kaal Purusha Kundli. Further, Mars is Deva Graha (though Krura Prakruti) and Venus belongs to Asuras (Guru of Asuras). This can also result into different nature of husband and wife under affliction of Krura Grahas!
3. Mars + Venus ~ Mars is following Venus i.e. Mars is following Wealth! This could result in Miser personality of Native (कंजूस).
4. Mars + Venus ~ Beautiful House.
5. Venus + Mars ~ Venus is following Mars i.e. Wealth is following Mars. This could result into Extravagant Nature (अपव्ययी) of the native.
6. Venus + Mars ~ Beautiful House and Well dress sense (Well Interior and lavishly expenses).

Note:

- (a). Strength and other Planet/s in conjunction, if present there to judge the further modification in traits of Venus & Mars.
- (b). The difference in qualities of the Conjunctions: Mars + Venus (कंजूस) v/s Venus + Mars (अपव्ययी) further holds a Key, which will be shared during discussion in Class.
- 7. At Progeny Level, Mars is male child, while Venus is female Child. Mars is unconditional Male while Venus is unconditional Female. Here, only need to check for severe affliction (by Enemy/Obstacle creator Planet).

Nadi Sutras: 59

Moon ~ Mood & Facial Expression

Moon is the Karka of मन & Mood. It's the Mood which gets influenced very soon as an event happens. Face is the Mirror of Emotions & Mood! As Mood swings, Facial Expression also Changes and this way the Feelings/Emotions can easily checked from Facial Expression of a Native.

In some cases, Facial Expression can also Fake or Managed to hide the Emotions or Feelings. This involves influence of other Planet/s on Moon.

Nadi Sutras: 60

Today everyone wants to know & understand about the methodology of Nadi Astrology ~ How to check for Professional Life?

In Nadi Astrology, there are some very important factors which need attention follow as:

1. The Native ~ Him/Herself (For male nativity ~ Jupiter & for female nativity ~ Venus).
2. Profession i.e. Karmas ~ Saturn.
3. Life Track ~ Spiritual or Materialistic or Mix ~ Influence of Rahu (Materialistic) & Ketu (Spiritual).

* The Sign Nature ~ Movable, Fix or Dual:

Check the Sign nature for Jupiter & Saturn to understand about Approach and Way of dealing in Personal & Professional Life.

* The Sign Direction ~ East, South, West & North:

Check the Sign - Direction for Jupiter & Saturn to understand about Geographical Directions as per Sign to check possible suitable area/city etc.

* The Four Disciplines ~ Duty/Religion, Wealth, Sexual pleasures & Salvation (चतुर्वर्ग साधन ~ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष). These are also checked according to Signs like:

1. Aries, Leo & Sagittarius are Eastern Signs and related to Duty/Region.
2. Taurus, Virgo & Capricorn are Southern Signs and are related to Wealth.
3. Gemini, Libra & Aquarius are Western Signs and are related to Sexual pleasures.
4. Cancer, Scorpio & Pisces are Northern Signs and are related to Salvation.

After above said 3 Points (Sign Nature, Direction & for Disciplines, next come:

1. Retrogression &
2. Sign Exchange are two important factors which need attention.
3. Mutual Placement.

Now, check each Planet's Primary Conditions according to above said parameters.

Nadi Sutras: 61

Family Lineages governed by Rahu & Ketu:

Rahu governs own Family Lineage, whereas Ketu governs Opposite side Relative's Family Lineage!

Among Navagrahas, Rahu & Ketu are the only two Planets (Two Geometrical Points) who always transit opposite to each other at a constant Speed! As per Hindu Mythology, Lord Vishnu cut off head of Asura Rahu with his weapon Sudarshan Chakra, but because of drinking Amrita.. Rahu's body remained alive, but in two parts as:

1. Head &
2. Body (धड़).

These two parts of Rahu later on awarded Graha Pada by Lord Brahma and this way, Head is known as Rahu Graha & Body (१५) is known as Ketu. This way, Rahu & Ketu always transit opposite of each other where in Kaal Purusha Kundli, Rahu is supposed to reside in Asc (as Asc governs Head of Kaal Purusha) and Ketu resides in opposite house i.e. the 7th House.

Rahu governs own Family Lineage ~ Grandfather, Great grandfather and Forefathers (Pitrus), where as Ketu governs Opposite side Relative's Family Lineage like:

- Mother's side ~ Maternal Grandfather & Great grandfather.
- Spouse' side ~ Own Father-in-Law & Great grandfather
- In-laws of other members of own Family (like Father's Sister's in-laws, own Sister's in-laws, Brother's in-laws & Daughter's in-laws etc.).

Note: Immediate relatives/relations are governed by other planets like Father& Father-in-law by Sun, Brother-in-law by Saturn/Mars etc.

Nadi Sutras: 62 (1) ©

Most Effective time period of: A Planet?

This question can have many replies. In first look, I always focus of each individual Planet's Natal Placement in Horoscope.

There:

- ~ a Planet can be in - Own Sign/ Its Exaltation Sign/ Friendly Sign/ Enemy Sign or Neutral!
- ~ a Planet can Direct/ Retrograde/Stationary or
- ~ a Planet can involved in Sign-Exchange in with other Planet

Note: Above are general views and conditions. Rest, other conditions can also be assumed by readers.

Regarding first point //~ a Planet can be in - Own Sign/ Its Exaltation Sign/ Friendly Sign/ Enemy Sign or Neutral!// """"Always results its maximum

at the time of Birth and during First Cycle of its Progression* by means of concerned Karkatvas/Significations!""""

This can be a good Nadi Sutra for Researches! Regarding "Progression Theory*", one can read my book: "Nadi Jyotisha Vol 1", available in PDF format free cost on FB.

Nadi Sutras: 62 (2) ©

Most Effective time period of: A Planet?

This question can have many replies. In first look, I always focus of each individual Planet's Natal Placement in Horoscope.

//~ a Planet can be in - Own Sign/ Its Exaltation Sign/ Friendly Sign/ Enemy Sign or Neutral!// ""Always results its maximum at the time of Birth and during First Cycle of its Progression* by means of concerned Karkatvas/Significations!""""

Why at birth time and during First Cycle of Progression? The moment when a native is born, his/her horoscope will point some specific Planetary Conditions... where Planets at level Individual as well Jointly would be representing the condition of Family members, Relatives, Wealth etc. One may have mother & father both and Grandparents, may have elder siblings, may have property etc etc. Like:

Sun ~ Father and Royal Favour, Bones & Right Eye.

Moon ~ Mother, Nourishment, Balaarishta, Left Eye, Suspected for Cold-Cough and Stomach related health issues, Water resources, Helping persons at the time of delivery (birth time).

Mercury ~ Lands, Relatives

Mars ~ Property, Father's younger brother and other relatives,

Venus ~ Wealth

Saturn ~ Facilities/Poverty

Rahu ~ Helping persons present at the time of delivery (birth time), Role of Paternal Grand Parents.

Ketu ~ Rituals performed at the time of birth and after birth, Role of Maternal Grand Parents.

Though, initially it may tough to relate all above said points with the native, but studies of many Horoscopes would be helpful to understand the Horoscopes in better way.

Regarding "Progression Theory*", one can read my book: "Nadi Jyotisha Vol 1", available in PDF format free cost on FB.

Nadi Sutras: 63

Sun + Rahu: Problem & Cure for Teeth

If natal Sun is afflicted or weak, whenever Rahu transits over natal Sun, causes issues with Teeth. Rahu tries to hurt Sun at its maximum like dead Teeth etc.

Also, If there is natural benefic (Jupiter or Venus) with Sun (along with Sun in conjunction/trine of Rahu), native may have interest/work/link in Dentistry. Native may be a Dentist also.

Note: This is a general observation. Here, House/Sign will also have a say. Sun + Rahu also points for Grandfather, Father and Son related special issues.

Nadi Sutras: 64

Who loves Gold ~ Sun, Venus or Jupiter? Think & Comment!

In my view, concerned Karkatva should be given more weightage. In case of Jupiter, its Color and Purity! In case of Sun, it's "Price", easy to maintain and transfer along with Royal and other importance also. For Venus, it's purely Wealth and Ornamental purpose. Like Female prefer more Gold accumulation as Wealth (also financial security) and Ornamental purpose. Though, in modern time, other medium has also emerged but still Gold is Gold.

नाड़ी सूत्र: 65

स्त्री जातक ~ वैवाहिक जीवन में परेशानी।

१. सूर्य + मंगल } ~ एक तरफ मंगल ग्रह पति का कारक ग्रह माना जाता है, तो दूसरी ओर सूर्य ग्रह को पिता/ससुर का कारक माना जाता है।
२. शनि+ मंगल } ~ मंगल ग्रह पति का कारक और शनि ग्रह असंतुष्टि कारक होता है।
३. राहु + मंगल } ~ संबंधों में तनाव और लड़ाई-झगड़ा।
४. केतु + मंगल } ~ सम्बन्ध विच्छेद की संभावना।

Nadi Sutras: 66

A friend in need is a friend indeed!

A student asked ~ How to analyse astrologically about a True Friend? Who is True Friend?

A friend, who helps out us when we are in trouble, is a true friend.

As per Nadi Jyotisha, Mercury is Karka of "Friendship" as well of "Lover (both~ Male & Female)".

Further, Male Nativity is governed by Jupiter & Female Nativity is governed by Venus. So, the following combinations are possible as per Gender:

- * Male Native ~ Himself (Jupiter) + Friend (Mercury) i.e. Jupiter + Mercury.
- * Female Native ~ Herself (Venus) + Friend (Mercury) i.e. Venus + Mercury.

Lover is governed by Mercury. So, if Love-Relationship (Mercury) gets materialized into Marriage (Venus).... Mercury transforms into Venus/Mars!

For Male Native: Jupiter + Mercury + Venus.

For Female Native: Venus + Mercury + Mars.

Here, we know Mars have enmity with Mercury! So, Jupiter comes here as rescuer!

Nadi Sutras: 67

How to judge future of Friendship?

First of all, one need to check his/her own condition according to governing Planet i.e. Jupiter or Venus. Check if Jupiter or Venus (according to Nativity Gender) is under affliction of Malefic/s? Further, check for other Nadi Rules i.e.:

- 1. Sign Exchange**
- 2. Mutual Placement of concerned Planets**
- 3. Progression of Planets etc.**
 - 1. Saturn ~ Platonic type attitude as well insecure nature in relationship, Introvert**
 - 2. Sun ~ Aggressive, much talkative as well scepticism.**
 - 3. Moon ~ according to Waxing or Waning and affliction. Further, Insecure to Psycho or humorous and jolly nature (विनोदी और हंसमुख प्रकृति) etc.**

Who will face defame even after doing well for Friends?... will be discussed in next article.

Nadi Sutras: 68

Rahu and Tobacco!

Rahu is Mouth and Sun (I consider as Teeth Karka also)... When one chew Tobacco/Paan Masala/Gutkha etc or Smoke or use too much of Beverages (like Beer etc).... will not only spoil Sun (Teeth), but also spoils Moon & Mars along with Mercury + Venus (Tongue). So, People having Sun + Rahu must avoid chewing Tobacco/Paan Masala/Gutkha etc.

Excess use of Rahu's Karka products (Tobacco/Paan Masala/Gutkha etc.) in longer run... can totally spoil Jupiter-Jeeva Karka by means of diseases like Cancer or similar.

Nadi Sutras: 69

Moon v/s Mercury v/s Neptune:

Moon is Karka of Mind (मन). Any affliction on Moon can affect badly at mental level.

Mercury is the Karka of Intellectuality.

Neptune is Karka of Emotions (भावनाएँ).

Moon <{Mercury+Neptune}>

Though, in general, Mind, Intellectuality and Emotions are termed as same, but it's the Mind~ where Intellectuality and Emotions grow and experienced. In other words~ Mercurian Intellectual ability and Neptunian Emotions get nourishment from Milky Ocean of Moon.

Moon~ itself is full of Joy, Mercury~ itself want to Enjoy, but it's the Neptune who is Hypersensitive and some time can overrule both Moon & Mercury! Neptunian afflictions can cause strange dislikes of specific conditions and circumstances that quite unobjectionable to the majority.

Further, source of Sensitivity and its nature need attention. Moon ~ the Karka of Mind.... if get strongly stirred by Saturn.... then Neptunian Hypersensitivity become active... which in result produces much unhappiness, if it is excessive... difficult to get cured.

Nadi Sutras: 70

Why we worship Rivers?

As per Nadi Astrology:

- * Moon + Rahu conjunction governs Sea and
- * Moon + Ketu conjunction govern River.

Ketu is Mosha Karka, that why most of the Holy Places, Temples and Titrthas are situated on the banks of Holy Rivers.

People visit these Holy Places, Temples and Titrthas situated on the banks of Holy Rivers take Holy bath during Auspicious Muhurtas/Parvs etc.

River Ganga, as per Shastras, is known as Salvation Karka (मुक्तिदायिनी).

Nadi Sutras: 71

A new approach:

From Aries to Pisces, the 12 Signs are, grouped into 3 Categories:

1. Aries to Cancer {Mars* + Venus + Mercury + Moon} ~ Worldly Desires and Attachments.
2. Leo to Scorpio {Sun + Mercury + Venus + Mars} ~ Self control + Education/Intelligence + Sensual Pleasure + Purusha
3. Sagittarius to Pisces {Jup + Sat + Sat + Jup} ~ Dharma (Fortune) + Karma (Efforts).

*Where:

Mars - Tamsik, Purusha~Basic instinct and Material Desires

Venus - Sensual, Prakriti, Pleasure and Wealth

Mercury - Education, Intelligence

Moon - Attachment & Enjoyment

Sun - Satvik and Social Activities and Passion

Jupiter - Satvik, Dharma, Fortune

Saturn - Karmas

Rahu - Materialism/Illusion

Ketu - Moksha/Salvation.

If we look in 1st Category: from Aries to Cancer, this indicates more interest in Material World like Mars - Sexual Energy, Venus - Sensual Pleasure, Mercury is Education and Intelligence and Moon- attachment. In this category, more like animal-instinct (पशु वृत्ति).

In 2nd Category: from Leo to Scorpio, indicates for Self Control and more understanding towards Materialism & Non-materialism. In this category more self control (आत्म - संयम).

In 3rd Category, only Dharma & Karma Karkas - Jupiter & Saturn are present which means Dharma is there to guide the Karmas on the path of Salvation. In this category, there is big role of God's-Blessings (भगवद् कृपा).

नाड़ी सूत्रः 72

आध्यात्मिकता और ग्रहः

१. सूर्य + केतुः राजऋषि
२. चंद्र + केतुः भक्ति-भाव (द्रवित), भ्रमित
३. मंगल + केतुः धार्मिक कटूरता, हथियार प्रदर्शन, शक्तिपात
४. बुध + केतुः तर्कवाद
५. गुरु + केतुः ज्ञान और विज्ञान, कुंडलिनी, योग, दक्षिण-मार्ग
६. शुक्र + केतुः संशय, मन्त्रिक-यांत्रिक, व्याकुल-कुंडलिनी, वाम-मार्ग में रूचि
७. शनि + केतुः क्षुद्र-देवता उपासक, विपरीत-धर्म (तंत्र में रूचि) अथवा स्वयं-पीड़ित

नाड़ी सूत्रः 73

शनि + चंद्रः

कोल्डस्टोरेज, डीपफ्रीज़ आदि से संबंधित कार्य जैसे ~ मिल्कप्लांट (दूध, दही, घी, मक्खन आदि), नॉनवेज (मीट, मछली आदि का भण्डारण), आइस-प्लांट, रेफ्रिजरेशन एंड ऐरकॉण्डीशनिंग वर्क्स आदि।

Nadi Sutras: 74

Meena Nadi: Nature of Planets & The cause of different results in Navamsha:

There are nine Planets, each having different nature, qualities, features etc. The nature of a Planet by means of Prakruti holds key about their results:

- Satvik Prukruti
- Rajsik Prukruti&
- Tamsik Prakruti

The nature wise categorization of Planets as follows:

- Satvik Planets: Mercury & Jupiter
- Raksik Planets: Sun, Moon and Venus
- Tamsik Planets: Mars, Saturn, Rahu & Ketu.

Important points to note here are: Satvik Planets give good results when they remain pure and unalloyed in their Satvik natur. Same rule applies to Rajsik and Tamsik nature Planets. It is not harmful if a Satvik gets Rajesik atmosphere and Rajsik Planet gets Satvik atmosphere, but they should not acquire the Tamsik atmosphere. And, a Tamsik Planet should not acquire the Rajsik or Satvik nature/atmosphere else extremely bad results are possible.

Nakshatras are also categorized as per their lord's nature like Jupiter and Mercury owned Nakshatras are of Satvik nature.

Friendliness among Planets:			
Planet	Nature		
	Satvik Friend	Rajsik Friend	Tamsik Friend
Sun	Jupiter	Moon	Mars
Moon	Jupiter	Sun
Jupiter	Sun	Moon	Mars
Venus	Mercury	Saturn & Rahu
Saturn	Mercury	Venus
Mercury	Venus
Rahu	Venus
Ketu	Jupiter
Mars	Jupiter

Next important point to understand here is: How a Satvik Planet can behave differently in same Navamsa Sign? Navamsa means 9th part of a Sign where each Sign is divided into 9 equal parts. These 9 parts are also further allotted Planet/Sign lordship at "Sub-Level". Like, in Aries Sign, all 9 parts are allotted lordship Aries to Sagittarius along with their Sign lords.

Like Jupiter in Aries Sign/Ashwani Nakshatra-4 Pada/Cancer Navamsa and Jupiter is Cancer Sign/Hasta Nakshatra-4/Cancer Navamsa.... In both conditions @ Navamsa... Jupiter is Exalted. Moon, Hasta Nakshatra lord, is Rajsik while Ketu, Ashwani Nakshatra lord, is Tamsik. So, in first condition, Jupiter is Rajsik Uccha (Exalted) in Hasta Nakshatra, 4 Pada while in Ashwani Nakshatra, 4 Pada, Jupiter is Tamsik Uccha. So, Jupiter's result for same Navamsha will differ a lot.

This way, a Yog Karka Planet can also get failed to deliver good results during its period if its Nakshatra dispositor lord is inimical/afflicted or ill placed.

Nadi Sutras: 75

Rahu & Ketu:

I like to call Rahu & Ketu as Radioactive Elements. One side, Sage Parashara had called them Tamo graha, while other side, if Rahu/Ketu in Trikona/Kendra Bhava with a benefic (Trikona/Kendraadhipati) and free from any malefic influence, then they are also known as Yoga karka. So, being Tamograha, both are highly malefic and result in destruction in general. If they are benefic as said above, they do good but with their own features/qualities.

Rahu affects/influence through physical or real means, while Ketu affects/influence through supernatural means. Important point to note about:

Ketu lacks "Bhu Tattwa."

नाड़ी सूत्रः ७६

विपरीत राजयोगः एक विशेष बात

यदि ६, ८ और १२ भाव के स्वामी स्वराशिस्थ हो, तो ऐसी स्थिति में जातक स्वयं का नुकसान होने के बाद जागता है। अर्थात् ऐसा जातक स्वयं के नुकसान के स्वयं ही जिम्मेदार होता है और ठोकर खाने के बाद ही सम्भलता है।

अपने विचार/अनुभव साँझा करें।

Nadi Sutras: 77

Restlessness of Mind

Moon and Mercury are two important Planets which need special attention to judge the nature of a native.

- * Moon governs Mind.
- * Mercury governs Intellectual Ability & Temperament.
- * Mercury is also associated with Education, Business, Writing Works, Financial business activities etc.
- * Intellectual Ability and Mind are like Trapped like a net.

Why temperament is associated with Mercury?

Mercury is known as teenager where because of surrounding conditions (Social, Family, and School, Changes in body @ Physical and Mental level).. the teenagers show different temperaments as per situation.

Same way, Moon governs Childhood as well Mind.

Any affliction of Moon because of Rahu/Ketu or Saturn can result into Restlessness of Mind. It is also seen that many people who are not much educated (in Academics), but they have very sharp Intellectual Abilities. This indicates Mercury's another side. So, it is necessary to understand the different qualities of Mercury by means of affliction.

Note: There is need to understand the difference between~ Mentally-retarded (मंद-बुद्धि) condition and Restlessness of Mind. Lack of Intellectual Ability is much close of Mental-retarded condition (मंद-बुद्धि). Here, Nativity Karka Planet (Jupiter or Venus as per Gender) also plays important role by means of purpose of Life.

Nadi Sutras: 78

Venus + Mars: Couple ~ Made for Each Other.

Often, astrologers misinterpret the conjunction of Venus + Mars (or Mars + Venus) as Sex Yoga. As per Nadi Astrology, Sex is not limited to Mars only,

Saturn and Jupiter also have a say on this. Further, as per Nadi Astrology, Mars governs Younger Brother, Brother-in-law, and Younger Uncle etc. Venus governs Wealth, Luxury, and Beauty etc. So, this way, many combinations can be possible.

What I think, in general, "Venus + Mars" conjunction indicates the "Couple ~ Made for Each Other" like condition where both, Husband and Wife, will be fond of each other. So, it's wrong to interpret conjunction of "Venus + Mars" as only Sex Yoga.

Nadi Sutras: 79

Why I spend more?

In families we see, one member spends more or lavishly while other members make their best to save. This like same situation, I occasionally face. My expenses always remain at their peak, but why?

From Nadi Astrological prospective, I am going to share my views~ Why I spend more?

Here, we need to understand some basic rules from Nadi Astrology:

- * Venus is ultimate Karka of Wealth & Prosperity i.e Richness.
- * Mercury governs Income (by means of Business/Job). Mercury governs flow of earning (i.e. Cash Flow).
- * Saturn governs all kind of Activities including Professional Activities. Here, Saturn points the Nature & Easy of doing Professional Activities.
- * Jupiter (Male Native~ Himself)
- * Venus (Female Native-Herself, Wife)
- * Mars (as Karka of Husband & also of Debt*)
- * Moon ~ The ultimate Karka of Expenses/Expenditure (Loose self-control).
- * Ketu ~ Donation, Doing Charity, Wastage of Money (more expenses)... knowingly or unknowingly.
- * Rahu ~ More expenses on Show off, more willingly.

Now Planetary Combinations:

- * **Saturn + Venus:** Richness, Wealth either continuing from Parents or native will earn & enjoy in 2nd half.
- * **Venus + Moon:** Whatever one earns or gets, same will get spent in evening.
- * **Venus + Sun:** More Expenses to maintain status and to show off.
- * **Saturn + Mercury:** Earning with hardship.
- * **Saturn + Ketu:** Obstacle in Professional Success.

Special Note: Venus, Mercury & Saturn are Key Planets from Earning Prospective. So, if these Planets are encircled by their Enemy Planet/s... concerned Problem may have to face like:

- * **Venus:** Less/No Savings
- * **Mercury:** Disturbance in Cash Flow or receiving Payments.
- * **Saturn:** Instability in Professional Life.

Nadi Sutras: 80

Phlegmatic Nature & Stomach ailments: Moon + Saturn

Moon is Water and Saturn is of Dry & Cold Air. In horoscope, Moon's link (in Conjunction or Aspect etc) with Saturn indicates Phlegmatic Nature.

Human body is supposed to be made of 60% to 78% (according to age) of Water i.e. Babies have the more, being born at about 78% water. By one year of age, that water amount drops to about 65%. In adult men, about 60% of their bodies are Water.

If we look at above said variation in percentage wise Water presence in body according to age, one can easily understand why Moon governs Childhood and Why Saturn governs Old age?

- * From birth to 12 years age... Moon is supposed to be Ruling-Planet because of excess presence of Water in the body. Water element is governed by Moon.

* From 13th year to 24th year age span.. Mercury is supposed to be the Ruling Planet because during this period, physical body grows more rapidly and attains solidity. Mercury governs Earth element.

* Similarly, old age is governed by Saturn. Because of Saturn is of Dry & Cold nature... the physical body starts shrinking.

So, whenever Moon's conjunction makes one suspected for Phlegmatic Nature. Next to this, the Sign/s in which Moon and Saturn are present.... need attention by means of Sign's own Nature i.e. Fiery, Earthy, Air or Watery?

Why Stomach ailments are checked with Moon?

Stomach governs Digestion Process which works with Heat (i.e. जठराश्री) by means of gastric acids & digestive enzymes. If the Moon i.e. Water Element is afflicted in Natal Chart by Saturn, then Dry and Cold impact of Saturn disturbed the nature of Moon which results into Phlegmatic issues as well disturbance (Slow) in Stomach Heat (i.e. मंद जठराश्री), which further results into poor digestion. Poor digestion of food results into fermentation of food & toxins formation like uric acid etc.

Nadi Sutras: 81 (Check old post dated 24 Jul 2016)

Meena Nadi:

Venus in Moon's Nakshatras: Rohini, Hasta & Shravana.... will make native of pompous nature but final results will be shallow. Natal Venus in Cancer Sign results same, specially, in first half.

Whatever a native shows to others related to Venus, in reality he/she may not have that much in possession quality wise.

Nadi Sutras: 82 ©

How to relate Mouth with Vastu as well Horoscope?

Generally, astrologers consider Mars as Karka of teeth. But; what I believe that... it is only half information.

I consider Sun as Natural Karka of Teeth and Mars as Functional Karka.



Further, Mars governs Gums. It's the gums, which provide base and well strength to teeth.

First time, I am introducing this new concept: How to relate Mouth with Vastu as well Horoscope?

In above pic, Jaw (जबड़ा) has been assigned Directions which follow as:

- * Mouth is governed by Rahu.
- * Upper Jaw is governed by Rahu.
- * Lower Jaw is governed by Ketu.
- * Front side of Jaw is assigned East direction, which is ruled by Sun.
- * Left side of Jaw is assigned North direction, which is ruled by Moon.
- * Right side of Jaw is assigned South direction, which is ruled by Mars.
- * The West Direction has no Teeth (Sun have enmity with Saturn).
- * Conjunction of "Sun + Rahu" indicates possibility of Teeth related health issues and Vastu Dosha in East Direction. Further, check for Sign's Direction occupied by Sun.
- * Conjunction of Mars + Rahu, Jupiter + Rah indicates possibility of Gum (मसूड़े) related health issues. Here, Sun also need attention.
- * If Mars is combust, possibility of weak teeth.
- * Sun + Rahu: Wide/Gap in Teeth.
- * Sun + Ketu: No/Narrow Gap in Teeth.
- * Sun + Saturn: Teeth related issues.

Like Jaw and Gums, Planets afflicted will also indicate possibility of Vastu Dosha as per their directions.

Explore this in depth and share your feedback.

Nadi Sutras: 83

Venus ~ the Unconditional Female Planet ©

Venus is the Karka of Female Nativity as Nadi Jyotish. For Man - Woman Relationship, Venus is the ultimate Karka of Wife (Woman) while Mars is known as Karka of Husband (Male).

Though there are two more Planets ~ Sun & Jupiter. Sun governs Father, while Jupiter governs Fortune in case of Female Nativity.

Further, for Female Nativity, Mars governs First Husband, Jupiter governs Second Husband and Saturn governs Third Husband.

Now, Rahu and Saturn, both, are supposed to be best friends of Venus. Rahu is known as disciple of Sukracharya (Venus) and Saturn is more attached with Venus at emotional level.

There is difference between approaches of various Planets towards Venus i.e.:

1. Sun have enmity with Venus. Sun also the Karka of Fatherhood. A father has to strict and more disciplined to guide and take care for his Kids.. for their kid's welfare and bright future!
2. Mars is Karka of Husband and in competition like situation with Venus. To support family institution, both, husband and wife has to competent and energetic!
3. Jupiter and Venus both are Gurus, but in opposition to each other.
4. Saturn is more attached and of "Caring Nature" for Venus. It's tough to separate them.
5. Rahu is the disciple of Shukracharya and he tries his best to pamper Venus. This results in more materialism for Venusian Traits. Rahu operates to nourish Desires.
6. Ketu is originally a part of Rahu, but Ketu and Rahu both of different Nature and Qualities! Ketu influence at Manas Level; who further keep on agitating Mind/Manas in search of Truth. Ketu is more like who have

surrendered himself to Lord Vishnu! Whereas on other side; Shukracharya is of opposition of Lord Vishnu. So, when Ketu joins Venus... he tries to bring Venus to surrender for Salvation! But, it's not easy for Venus to surrender. This results into conflicts at materialism.

7. Moon~ Karka of Mind as well Expenses and Travelling, when joins Venus~ Feminine and Wealth Karka is not considered good. Venus and Moon have enmity. Though Moon enjoys Exaltation status in Taurus Sign, Venus in Cancer Sign is not considered much beneficial.
8. Mercury with Venus is not good combination because Mercury has enmity with Mars (Husband for Venus).
9. Sun + Mercury + Venus = Excellent combination for Luxury and Luxurious Life Style.
10. Sun + Venus = Good combination for Luxurious Life Style but creates Ego and health issues for Female.
11. Venus + Ketu = Confusion between Spiritualism and Materialism, Intuitive, Independent Nature & More expenses.
12. Venus + Saturn = Insecurity, Conflicts in personal, Intuitive, Self Employment.

Nadi Sutras: 84

Rahu & Ketu: Part 1

I like to consider Rahu & Ketu as Radioactive Elements. One side, Sage Parashara had called them Tamo graham; while other side; it is said... if Rahu/Ketu in Trikona/Kendra Bhava with a benefic (Trikona/ Kendraadhipati) and free from any malefic influence, then they are also known as Yoga karka.

So, being Tamograha, both are highly malefic and result in destruction; in general. If they are benefic as said above, they do good but with their own and features/qualities.

Rahu affects/influence through physical or real means while Ketu affects/influence through supernatural means. Important point to note about Ketu is: Ketu lacks "Bhu Tattwa."

Nadi Sutras: 85

Rahu & Ketu: Part 2

We all know radioactive elements like Uranium etc. Such element always emits radiation which is harmful for living beings. Same way; Rahu and Ketu act. Like; radioactive elements need careful handling as well careful utilisation for welfare of human beings. Any error in handling or misuse can be extremely harmful. Same way, Rahu and Ketu's natal placement should be benefic as said in previous post.

Ketu is known as Jiva Karka as per BPHS. Now, interesting point comes here as: A Tamo Grah as Jiva Karka!

About this; Ketu when acts as Tamo Grah; can results into Jiva-Hani (i.e. Loss of Jiva (Life), like multiple abortions, death/loss of more than one/two life partners). Whenever Ketu is benefic, it result in~ Plurality (more than actual desired)... like Twin/Triple/more births, multiple marriages, where all partners are alive and attached with native. At spiritual level, native with negative Ketu.... worships lower deities like Bhoot, Pret etc. Native with benefic Ketu looks for Salvation or may prefer charitable activities in an independant nature.

Benefic Ketu makes one intuitive and very much clever while negative Ketu makes one "mandbuddhi".

Benefic Ketu carry forwards good deeds, benefits of Sadhna as well blessing of Guru, directly or indirectly while adverse Ketu carry forwards hidden sufferings/doss whose cause is very difficult to know. Kato lacks "Buhl" element and operates at Mamas level.

Nadi Sutras: 86

Rahu & Ketu: Part 3 (a)

Rahu and Ketu are known as "Tamo Grha (तमो ग्रह)" as per Sage Parashara. Also, it is said that Ketu is Moksha (Liberation) Karka.

How can a Tamo Graha be known as Moksha Karka also?

Moksha means Termination of: all kind of Karmas or any kind of Debt. Moksha would be a state where no Karmic debt is pending. Further, there would be no Purusartha, except worshiping God. Fate will give only Livelihood required for survival that would be also because of God's grace.

Ketu governs Termination of Karmas. All worldly issues, relations, responsibilities need to be fulfilled before attaining the state of Moksha. One has to judge whether Jeeva will go in to mouth of Kaala or will attain Liberation.

- Jeeva is Jupiter.
- Kaala is Rahu.
- Liberation is Ketu &
- Worldly matters are Saturn.

So, Ketu's immediate connection with Jupiter or Saturn or both in a horoscope can suddenly change the Life Track of the native depending upon Dasa or Transit. Why People suddenly become so much spiritual or sudden get detached from worldly matters? All those situations result because of Ketu.

Nadi Astrology: 87

Rahu & Ketu: Part 3 (b)

In earlier Posts, on the basis of BPHS, I shared that one side, Rahu & Ketu are Tamo Grahas, other side if they are in Trikona/Kendra with a benefic, and then result well. But that statement is not complete in itself. How to predict with such rules, some time results in fatal failure.

Any rule should not be applied blindly. Like for Gemini Asc, Venus with Rahu in Virgo Sign in 4th house... Rahu may not be good in practical, but as per rule, Rahu would be a benefic there. Here, Venus being 5th lord is functional benefic and being 12th lord is neutral. So, Venus will result good as well bad depending upon aspect or paapkartri/shubkartri yoga influence. Now, Venus is Karka of Wife. So, there could issues with wife as Rahu will severely affect Jeeva factors of Venus but on other side, native may enjoy (!) with Rahu's own Karkas. Here, Rahu will promote his own Jeeva factors in native's life, while downgrade Jeeva factors of the adjacent planet.

Also, Rahu is known as Dhatu Karka and Grand Father Karka. Native may get more close with Grandparents. Rahu may promote research in Shastras because Venus is governs all Shastras.

Nadi Sutras: 88

Rahu & Ketu: Part 4

Rahu as Kaal:

In Nadi Astrology, Jupiter is known as Jeeva and Rahu is known a Kaal. Kaal means Mouth of Snake or Death. Whenever Jupiter during its Progression (where each cycle is of 12 years) meets Rahu Degree wise, that period can be harmful (or कृष्णकाल).

Here, Sign Exchange by Jupiter during Transit and Long life supporting conditions (पूर्णायु योग) also need attention.

Like Jupiter is Asc and Rahu in 5th house, there Jupiter under Progression would take 60 years (approx.) to meet Rahu. So, that particular year (61 or 62.....) could be proved fatal. Always follow Degree wise Progression. Next, during fatal year, check for benefic yoga to avoid wrong analysis in case of पूर्णायु योग.

Nadi Sutras: 89

Ketu: The Flag Bearer

Mythological, Ketu is known as Headless which makes him a mysterious planet among NavaGrahs. When there is no Head... how he deliver his results?

Graphically, Ketu is also represented by means of "Flag". A Flag is not just a piece of Cloth. Flag represents the "Presence, Identity, Freedom, Victory & Authority" by means of its Shape & Colors. If we refer to olden days, Flags were commonly seen on top of Temples, Forts, and Boundaries to identify Territories. In battle fields, it's the Flags which represent ~ Presence, Identity, and Freedom & Authority of respective sides. Also, the Winner announces his Victory by hoisting their Flag.

A full hoisting Flag also represents Pride and Joyful Time. While Flag at half mast, indicates the mourning period.

If we look on Flag with more research point of view.... A Flag has no own Identity, but it is used as Identity. Any Blemish on Ketu can challenge the native's own~ Presence, Identity, and Freedom, Victory, Pride, Joyful period & Authority.

Nadi Sutras: 90

Why Moon is Karka of Expenditure?

In Taurus Sign, Moon is considered Exalted. In Kaal Purusha Kundli, 2nd house is Dhana Bhava as well in Nadi Jyotish, Venus governs Wealth.

Moon is Mood, Mind and Desires. For Desire Fulfilment, Money is Key factor. Moon will get Money from his Sign of Exaltation. A Planet in its Sign of Exaltation gets extra privileges.

At friendship level, Moon and Venus have enmity. This way also, Moon is supposed to destroy the Venusians Karktva – Wealth by means of more Expenses.

Nadi Sutras: 91

Different stages for Female Nativity:

There are 3 Female Planets:

1. Venus: (Unconditional Female Planet),
2. Mercury: (Conditional Female Planet ~ as well before Menstrual Cycle Start age like before 11 -12 years age) and
3. Moon: (after Menopause stage).

The Life cycle of Female nativity is divided into 3 stages as said above.

1. Kumari (Before start of Menstrual Cycle/Puberty)
2. Ability for Child Birth (according to age)
3. After Menopause (No Child birth)

Nadi sutras: 92

In case of Male Native: Jupiter is governing Planet and its Progression is checked, but at subtle level, like Female Nativity... we need to consider other Planets also.

1. Before adolescence (किशोरावस्था)... it's Mercury (no ability to have progeny)
2. With start of adolescence (किशोरावस्था) .. to Old age i.e. up to 60: Mars (Masculine Strength) + Venus (Sperm) ability to have Progeny
3. 60+ onwards... Saturn (Weak) + Venus; where Saturn replaces Mars.

Nadi Sutras: 93

Jupiter is the Ultimate Planet which needs attention everywhere in Nadi Jyotisha. It's the Jupiter or Venus (according whose role is replaced by other Planet/s according to Relationship)

Like: A Native himself is Jupiter, but when he goes to his mother/father, he is considered as Son ~ Sun (Karka Planet to be checked from Parent's Horoscope).

A Native himself is Jupiter, but he get married, he is considered as Husband ~ Mars (Karka Planet to be checked in Wife's Horoscope)

A Native himself is Jupiter, but he become Father, he is considered as Father ~ Sun (Karka Planet to be checked in his son's Horoscope)

A Native himself is Jupiter, but he become Elder brother, he is considered as Elder Brother ~ Saturn (Karka Planet to be checked from younger sibling's Horoscope).

Nadi Sutras: 94

संतान और सर्प दोष

ज्योतिष के ग्रन्थों में संतान हीनता/हानि की स्थिति के लिए उत्तरदायी अनेक प्रकार के ग्रह-योगों का वर्णन मिलता है। संतान हीनता/दोष के संदर्भ में सर्प दोष का विशेषतः विचार किया जाता है।

सर्प दोष (ग्रह योग): सूर्य + राहु

नाड़ी ज्योतिष के अनुसार, सूर्य संतान/पुत्र कारक माना जाता है। सर्प को राहु का प्रत्यधिदेवता माना जाता है। सूर्य + राहु की युति के कारण यदि संतान हीनता/दोष हो तो, ऐसी स्थिति में पूर्व जन्म में सर्प के प्रति की गई हिंसा को कारण माना जाता है। यहां सूर्य + राहु की युति एक ही राशि में या त्रिकोण संबंध के अनुसार या दोनों के मध्य किसी भी अन्य ग्रह/ग्रहों की उपस्थिति न होना आवश्यक है। इसके साथ ही यदि सूर्य /राहु के पञ्चम भाव से सम्बन्ध भी हो तो दोष की संभावना बढ़ जाती है। उपरोक्त स्थिति में सूर्य का किसी अन्य ग्रह से राशि/नक्षत्र स्तर पर परिवर्तन नहीं होना चाहिए।

यहां एक बात और ध्यान देनी चाहिए कि यह आवश्यक नहीं है कि सूर्य + राहु की युति प्रत्यक्ष हो। राशि/नक्षत्र स्तर पर परिवर्तन के बाद भी सूर्य की राहु से युति संभव हो सकती है। सूर्य और राहु की युति के विश्लेषण के दौरान दोनों ग्रहों द्वारा अधिष्ठित राशि/राशियों के स्वामी से उनके मित्र/स्व/शत्रु आदि सम्बन्ध प्रकृति, पारस्परिक-स्थिति, अंशात्मक दूरी और गोचर दिशा को ध्यान देना चाहिए।

नाड़ी ज्योतिष के अनुसार, सूर्य को पिता और राहु को पितामह (दादा) का कारक भी माना जाता है। सूर्य + राहु की युति में एक तरफ जातक के जातक के पिता का जीवन संघर्षमय होने की संभावना होती है तो, दूसरी तरफ दादा के प्रभावशाली और प्रसिद्ध होने की संभावना होती है। सूर्य + राहु की युति (एक ही प्रकार से या अलग-अलग प्रकार से) परिवार के सभी या अनेक सदस्यों की कुंडली में उपस्थित हो सकती है। सर्प दोष के विषय में एक बात और ध्यान दे-

राहु और केतु दोनों ही ग्रह ~ सर्प दोष कारक है। लेकिन इनकी प्रकृति भिन्न भिन्न है।

ध्यान देने योग्य~ अनेक बार अनुभव होता है कि ग्रह-दोष उपस्थित है, लेकिन उससे सम्बन्धित दोष प्रत्यक्ष नहीं होता है।

सूर्य सन्तान का कारक ग्रह है। नाड़ी ज्योतिष में ग्रह के कारकत्व को ही अधिक महत्व दिया गया है। भाव और भावेश को नाड़ी ज्योतिष में अधिक महत्व नहीं दिया जाता है। वस्तुतः सिद्धान्त को समझना आवश्यक है। वर्तमान समय में विभिन्न सिद्धान्तों की खिचड़ी पका कर रख दी गई है। जिसके कारण किसी भी सिद्धान्त या मत में परिपक्तता की कमी महसूस होती है।

Nadi Sutras: 95

A Special View: How to understand purpose of Life from Jyotisha?

* 1-5-9 Signs/Houses ~ Dharma/Religion (Way of Happy Life):

It teaches Ethics, Duties, Personal & Social Welfare and tells us about the creation. Learning about worshiping-procedure. A man should learn about his ancestors and further, he must have a strong foundation for his descendants. Human, Social, Ecological and Natural Resources Welfare are the Key concerned areas here.

* 2-6-10 Signs/Houses ~ Artha/Financial Matters:

A civilized society need to encourage the practice for right mean for livelihood. In social structure, people have mutual dependency by means of Exchange of Goods/Resources/Services etc. For this, Financial matters (Source of Earning as well medium of Exchange) and their effective management need special attention which further act as Spine for Civilized Society. Artha should be governed by Dharma, that's why Dharma Bhavas come just behind Artha Bhava. This Earning should be as per socially accepted practices.

* 3-7-11 Signs/Houses ~ Kama/Lust:

Kama is not only limited to Sexual pleasure. Kama at broad level deals with all means of Pleasure & Comforts desired in Material World. It may be Sports, Sexual Pleasure, Enjoyment means like Singing, Dancing, Pleasure Tours, Festivals, Food, Beverages, Cloths, Household Machines, Beauty products etc etc. Kama i.e. Desire for a man ~ how to fulfil his wishes and wishes tell the secrets of how to behave in society and to succeed in life. Artha is one of the most important necessity (special in Kaliyuga) which is necessity for KamaSukha.

* 4-8-12 Signs/Houses ~ Moksha/Salvation:

As per Hindu Mythology, Moksha/Salvation is the ultimate goal/purpose of Human Birth which means to get free from "Birth & Death Cycle". मृत्यु के साथ सब कुछ यहीं छूट जाता है। मरने वाला अपने साथ कुछ नहीं ले जा सकता!

Nadi Sutras: 96

Mutual Placement ~ How to Proceed?

Regarding fundamentals of Nadi Jyotisha, in Video lectures and Nadi Jyotish Vol 1 PDF Book, I have shared views on "Mutual Placement of Planets". Which points need attention, are:

1. Degree wise Placement of Two or more Planets with in a Sign.
2. Arrange all the Planets "Degree wise". With this arrangement, one can easily identify which Planet is ahead or in back.

3. Check the Direction of Motion of Planets i.e. Direct/Retro/Stationary (in astrological prospective). This way, one can easily check for "Applying Aspect" & "Separating Aspect". This makes easy to understand whether a Planet will act as an Obstacle Creator or Benefic.

Note: Applying Aspects indicates the possibility of happening of concerned event in Future, while Separating Aspects indicates that the possibility of happening of concerned event in past i.e. it may already happened!

4. Karkatvas of each Planet (in question) and Planet's "Friendship Nature: Friends, Enmity, Neutral, Exalted, Debilitated or Combust (Asta)). This will help to understand the Strength of Planets.

5. If any Planet/s are involved in "Sign Exchange". This will be helpful to understand the modification in Results of concerned Planet/s "Before & After Sign-Exchange".

Nadi Sutras: 97

प्रोग्रेशन v/s गोचरः एक ग्रह दूसरे ग्रह को कैसे प्रभावित करता है?

प्रोग्रेशन और गोचर, दोनों विधियां, अलग-अलग है, लेकिन दोनों का आरम्भ/विचार जन्मकुंडली में उपस्थित जन्मकालिक ग्रहों की स्थिति से करते है।

प्रोग्रेशन के अंतर्गत, ग्रह-विशेष को एक काल्पनिक विधि के अनुसार प्रति चक्र-प्रति ३० अंश-एक विशेष समयावधि (वर्षों) के अनुसार जन्मकुंडली में उपस्थित जन्मकालिक ग्रह-विशेष को आगे या पीछे (मार्गी/वक्री गति के अनुसार) प्रोग्रेस किया जाता है।

गोचर के अंतर्गत, जन्मकालिक ग्रह-विशेष की स्थिति के अनुसार वर्तमान समय ग्रह/ग्रहों-विशेष की वास्तविक राशि-उपस्थिति का परस्पर विचार किया जाता है। लेकिन ज्योतिष का अभ्यास करने वाले बहुत से लोग प्रोग्रेशन और गोचर के भेद को नहीं बता सकते है।

सूर्य ग्रह का जन्मकालिक मंगल ग्रह से प्रोग्रेशन और मंगल ग्रह का जन्मकालिक सूर्य ग्रह से प्रोग्रेशन के अंतर को समझने का प्रयास करें।

सूर्य ग्रह का गुण-धर्म ~ इच्छा और उत्साह (लेकिन नियंत्रित)। मंगल ग्रह का नैसर्गिक गुण-धर्म ~ हिंसात्मक प्रवृत्ति (लेकिन अनियंत्रित)।

दोनों के परस्पर प्रोग्रेशन में अंतर यह है कि ... जब प्रोग्रेसिना सूर्य जन्मकालिक मंगल की ओर जाता है, तो सूर्य अपने नैसर्गिक गुण-धर्म: इच्छा और उत्साह रूपी गुण को

मंगल के नैसर्गिक गुण-धर्मः हिंसात्मक प्रवृति के माध्यम से एक अनियंत्रित तरीके से अभिव्यक्त करता है।

दूसरी ओर, जब प्रोग्रेसिना मंगल जन्मकालिक सूर्य की ओर जाता है, तो मंगल अपने नैसर्गिक गुण-धर्मः युद्ध शक्ति, हिंसात्मक प्रवृति और यौन व्यवहार को सूर्य के गुण-धर्मः इच्छा और उत्साह (लेकिन नियंत्रित) से अभिव्यक्त करता है।

नियम यह है कि: "प्रोग्रेसिना ग्रह स्वयं को उसी तरीके से अभिव्यक्त करता है जो रेडिकल प्लैनेट (जन्मकालिक ग्रह) प्रदान करता है।"

दूसरी तरफ गोचर में, जन्मकालिक ग्रह के गुण-धर्म गोचर-ग्रह विशेष द्वारा प्रभावित होते हैं।

जब गोचर-नेपच्यून जन्मकालिक-शनि से गुजरता है, तो शनि की भावनात्मक और उदास प्रवृति को पूर्णतः उद्देलित कर देता है। लेकिन इसके विपरीत, गोचर -शनि जब जन्मकालिक-नेपच्यून से गुजरता है, तो नेपच्यून की अति भावनात्मक और उदास प्रवृति को काफी हद तक नियंत्रित कर देता है। क्योंकि नेपच्यून की तुलना शनि अधिक आत्म-नियंत्रित है। इस प्रकार प्रोग्रेशन और गोचर के भेद को समझते हुए फलित-विचार करना प्रशस्त है।

Nadi Sutras: 98

बृहस्पति-गोचर विचारः

नाड़ी ज्योतिष के अनुसार बृहस्पति-ग्रह को भाग्योदय कारक माना जाता है। जन्मकालिक ग्रहों के त्रिकोण में बृहस्पति ग्रह का गोचर-भ्रमण सामान्यतः शुभता कारक माना जाता है। जैसे:

१. स्वयं के त्रिकोण में: सन्तानोत्तप्ति, धन-लाभ, शुभ-कार्य, मांगलिक उत्सव आदि।
२. शनि के त्रिकोण में: सरकारी पक्ष से लाभ, पदोन्नति, मान-सम्मान में वृद्धि आदि।
३. राहु के त्रिकोण में: मुकद्दमे आदि वाद-विवाद में विजय, निम्न-वर्ग से लाभ और शुभ कार्य आदि।

Nadi Sutras: 99

Gemini Sign rules.... Singing/Dancing/Music and Acting (Music and Film industry, Even Classical Signing/Dancing etc). Gemini Sign is ruled by Mercury.... Mercury is supposed to "Mohini Swaroopa" of Lord Vishnu as per Nadi Jyotisha. Mythological, we all know the purpose of Mohini Swaroopa

of Lord Vishnu to Protect Amruta from Asuras and also to distribute the same among Devtas.

All Asuras got mesmerized by the Singing-Dancing-Looks of Mohini Swaroopa. So, it's the Lord Vishnu ~ Mercury who by means of Gemini Sign rules Singing/Dancing/Music and Acting (Music and Film industry, Even Classical Signing/Dancing etc).

Next to Mercury, Rahu also governs Singing/Dancing/Music and Acting (Music and Film industry, Even Classical Signing/Dancing etc) related activities!

Nadi Sutras: 100

बृहस्पति की अन्य ग्रहों से युति:

नाड़ी ज्योतिष में दो या अधिक ग्रहों की युति अपने आप में विशिष्ट होती है। सर्वप्रथम जीव कारक ग्रह- बृहस्पति की अन्य ग्रहों से युति के विषय में आज की क्लास में बात करेंगे। युति मात्र दो ग्रहों का साथ बैठना नहीं है। पाराशरी और अन्य सिद्धांतों के अनुसार युति को विशेष महत्व दिया गया है, लेकिन नाड़ी ज्योतिष में युति के सन्दर्भ में और अधिक सूक्ष्मता से विचार किया जाता है। यह सूक्ष्मता ही फलित के सही विश्लेषण का आधार बनती है।

बृहस्पति जोकि देव गुरु है.. ज्ञान और विवेक के भंडार है। जब बृहस्पति दूसरे ग्रहों से युति में होते है, तो उनके अपने गुण-धर्म का दूसरे ग्रह-विशेष से किस प्रकार समन्वय होता है, यह समझना महत्वपूर्ण है:

- * बृहस्पति + राहु = सांसारिक भोग में मोह और बाद में कष्ट, 'व्यक्तिगत' विवेक की हानि।
- * बृहस्पति + केरु = सांसारिक भोग से मोह भंग और बाद में मुक्ति, आत्म नियंत्रित, 'व्यक्तिगत' विवेक की जाग्रति।
- * बृहस्पति + सूर्य = अधिकार, संतुष्टि और वृद्धि/ उन्नति।
- * बृहस्पति + चन्द्रमा = बेचैनी, आरण्मिक उन्नति/वृद्धि, अधिकार लेकिन असंतुष्टि।
- * बृहस्पति + मंगल = आक्रमकता, प्रभावशाली, प्रतिष्ठित, नियंत्रक।
- * बृहस्पति + बुध = प्रसिद्ध ज्योतिषी, गणितज्ञ, नीति विचारक, लेखक।
- * बृहस्पति + शुक्र = स्नेही, कामुक, ज्ञानवान लेकिन आत्मनियंत्रण कमजोर।

* बृहस्पति + शनि = धर्म-कर्म।

बृहस्पति की अन्य ग्रहों से युति सम्बंधित फल पूर्ण नहीं माने जा सकते हैं। ये मात्र एक प्रकार की परिस्थिति या फलित की सम्भावना के सूचक हैं। इन सभी को पुनः अनेक प्रकार से विचार किया जा सकता है।

फलित विचार के दौरान राशि- नक्षत्र और अन्य ग्रहों के प्रभाव को भी ध्यान में रखना चाहिए। उपरोक्त ग्रह-युति यदि पाप प्रभाव में हो, तो फल विपरीत होने की सम्भावना भी हो सकती है।

Some notes from classes:

- ज्योतिष साधको के लिए उपयोगी विचार:
सूर्य मात्र प्रकाश या ऊर्जा का स्तोत्र नहीं है। सूर्य को जगत की आत्मा कहा जाता है। ज्योतिष को बेहतर तरीके से समझने हेतु आत्मिक बल सहायक और आवश्यक भी होता है। आत्म-बल वृद्धि हेतु सूर्य उपासना प्रशस्त है। गुरु के निर्देशानुसार कवच, मंत्र जप या विशिष्ट-साधना में अग्रसर होना चाहिए। साधना को भ्रष्ट/दूषित होने से बचाये।
साधारण स्तर पर प्रतिदिन प्रातः काल में सूर्य को अर्ध्य देना प्रशस्त है। नित्यप्रति ध्यान और त्राटक प्रशस्त है। इसके अतिरिक्त, नवग्रह उपासना भी नित्य या पर्व आदि के दौरान शुभता कारक होती है। प्रतिदिन और वार्षिक स्तर पर दान (भोजन का दान, गौ-ग्रास, पंचबलि, माता-पिता की प्रत्यक्ष सेवा, वस्त्र दान आदि) करने का प्रयास करना चाहिए।
- राहु ग्रह सांसारिक कर्मों में अधिक रुचि कारक है, जबकि केतु सांसारिक कर्मों को बाधा कारक है। बिजनेस और नौकरी सांसारिक कर्म माने जाते हैं। बिजनेस और नौकरी के लिए शनि से विचार किया जाता है, और अन्य ग्रहों का प्रभाव बिजनेस या नौकरी के सिलेक्शन में अपना प्रभाव डालता है।
- सूर्य ग्रह पिता और पुत्र और सरकारी पक्ष और स्वाभिमान का कारक है। सूर्य ग्रह राइट आंख और पैतृक संपत्ति अर्थात् पिता के जरिए मिलने वाली चीजों को गवर्न करता है। सूर्य-शनि की युति में जातक पिता के व्यवसाय में सहायक होता है या पिता के व्यवसाय में आगे बढ़ता है या पिता के सहयोग से व्यवसाय करता है।
- सूर्य शनि की युति में जातक सरकारी नौकरी या सरकार के माध्यम से आजीविका प्राप्ति के कार्य भी करता है। यदि सूर्य अधिक बली है तो ऐसा जातक पिता के नियंत्रण में रहता है या सरकारी नौकरी भी कर सकता है।
- यदि शनि अधिक बली है तो ऐसी स्थिति में जातक दूसरे के अधीन कार्य नहीं कर सकता ऐसी स्थिति में जातक स्वतंत्र कार्य करता है लौकिन अप्रत्यक्ष रूप से जातक पिता-पुत्र का सहयोग भी अपने व्यवसाय में लेते देखे गए हैं।
- एक सूत्र नोट करें यदि गुरु और शनि के मध्य राहु अथवा केतु है ऐसी स्थिति में जातक की शिक्षा और व्यवसाय में भिन्नता हो सकती है।

- एक सूत्र और नोट करें: टांजिट में शनि जब भी पहली बार जन्मकालीन राहु से गुजरता है, ऐसी स्थिति में जातक नौकरी या व्यवसाय शुरू करता है। अपना अनुभव साँझा करें।
- शनि को कर्म कारक और केतु को सांसारिक कर्मों में बाधा कारक माना जाता है। ऐसी स्थिति में यदि केतु ग्रह शनि ग्रह की तरफ दृष्टि रखता है। व्यवसाय में अनेक बाधायें आती हैं और 30 वर्ष की उम्र के बाद ही सफलता प्राप्त होती है। यदि शनि और केतु एक दूसरे के विपरीत जा रहे हैं, ऐसी स्थिति में जातक स्वतंत्र व्यवसाय अधिक कामयाब होता है। ऐसे जातक दूसरों के अधीन कार्य नहीं कर सकते।
- शुक्र और शनि की युति सर्विस प्रोवाइडर सेक्टर में सफलता दायक होती है। उदाहरण के लिए: वकील, ज्योतिषी, चार्टर्ड-अकाउंटेंट अथवा ऐसे ही स्वतंत्र प्रकृति वाले कार्य सफलता दायक होते हैं। उपरोक्त स्थिति में अधिक समय तक नौकरी में भी कम उन्नति मिलती है, जिसके कारण ऐसे जाता है 36 से 40 साल की उम्र के दौरान अपने व्यवसाय के लिए भी कोशिश करते देखे गए हैं।
- वक्री ग्रह का प्रभाव पिछली राशि/भाव पर भी माना जाता है। यहां प्रभाव की क्षमता को समझने के लिए सबसे पहले यह जानना आवश्यक है, की वक्री ग्रह वक्रता-अवधि के दौरान एक ही राशि में गोचर में रहा है या 2 राशियों में गोचर कर रहा है।

Book References:

1. Core of Nadi Astrology
2. Bhrigu Nandi Nadi & other Books by Shri R G Rao
3. Saptarishi Nadi
4. Books by Dr (Prof) D C Negandhi Ji
5. Puranas by Geeta Press
6. BPHS

कुछ उपयोगी लिंक:

Nadi Astrology (नाड़ी-ज्योतिष): Astrological Researches
<https://www.facebook.com/groups/266535793479406/>

Astrological Researches Group
<https://www.facebook.com/AstrologicalResearchesGroup/>

Astrological Researches
<https://www.facebook.com/groups/smmmjvsrk/>

You Tube Channel:
Astrological Researches Group
<https://www.youtube.com/channel/AstrologicalResearchesGroup>

Whatsapp Groups (Contact for further details): Free Nadi Astrology Group:
Nadi Astrology: A R Group
<https://chat.whatsapp.com/GiWqIN8sxwl4gwec6ynORa>